भूत (Past) और भविष्यत् (Future) है। संस्कृत में क्रिया के वर्तमान काल सूचक रूप 'लट्' के, सामान्य (जिसमें कोई शर्त नहीं लगे) भविष्यत् सूचक रूप 'लृट्' के; एवं सामान्य भूत काल सूचक रूप 'लुङ' के रूप कहे जाते हैं।

एक लोट् लकार है जो 'तुम पढ़ो' 'मैं जाऊँ' ? वे आयुष्मान हों इत्यादि रूप से विधि (आज्ञादि) और आशीर्वाद दोनों में से किसी भी अर्थ का सूचन करने के लिये प्रयुक्त किया जा सकता है।

जब इस प्रकार के वाक्य का अनुवाद करना हो कि 'यदि परिश्रम करते तो उत्तीर्ण होजाते' अर्थात् जहां एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर आश्रित हो, जहां हेतु और हेतुमत् साथ देने हों तो वहां 'लृङ' के रूप आते हैं। वर्तमान और भविष्यत् में हेतु हेतुमत् के लिये लट् और लृट् के रूप भी प्रयुक्त किये जाते हैं।

इस प्रकार लट् लृट् लोट् लुङ और लङ् इन ५ (हर एक में ल् लगा रहने से) लकारों से अनुवाद का काम चल जाता है। परन्तु संस्कृत में इनके अतिरिक्त भी ५ लकार हैं, उनका ज्ञान करना भी यहां प्रकरणानुकूल आवश्यक होने के अतिरिक्त इसलिये भी उपयोगी है कि आप उनका प्रयोग चाहें करें या न करें, परन्तु दूसरे लेखकों के लेखों में व्यवहृत उन लकारों के प्रयोगों का अर्थ समझ सकें, साथ ही उन्हें जान लेने पर स्वयं भी प्रयुक्त कर ही सकेंगे।

भूतकाल में ३ लकार

भूतकाल में लुङ् के अतिरिक्त २ लकार लिट् और लङ् के नाम से पुकारे जाते हैं। इनमें [illegible] लकार उन भूतकालिक क्रिया का सूचक [illegible] हो [illegible]

भूत (Past) और भविष्यत् (Future) है। संस्कृत में क्रिया के वर्तमान काल सूचक रूप 'लट्' के, सामान्य (जिनमें कोई काल नहीं होते) भविष्यत् सूचक रूप 'लृट्' के; एवं सामान्य भूत काल सूचक रूप 'लुङ्' के रूप कहे जाते हैं।

एक लोट् लकार है जो 'तुम पढ़ो' 'मैं जाऊँ' ? वे आयुष्मान हो इत्यादि रूप से विधि (आज्ञा) और आशीर्वाद दोनों में से किसी भी अर्थ का सूचन करने के लिये प्रयुक्त किया जा सकता है।

जब इस प्रकार के वाक्य का अनुवाद करना हो कि 'यदि परिश्रम करते तो उत्तीर्ण हो जाते' अर्थात् जहां एक क्रिया का होना दूसरी क्रिया के होने पर आश्रित हो, जहां हेतु और हेतुमत् साथ रहते हों तो वहां 'लृङ्' के रूप आते हैं। वर्तमान और भविष्यत् में हेतु हेतुमत् के लिये लट् और लृट् के रूप भी प्रयुक्त किये जाते हैं।

इस प्रकार लट् लृट् लोट् लुङ् और लृङ् इन ५ (हर में ल् लगा रहने से) लकारों से अनुवाद का काम चल जाता परन्तु संस्कृत में इनके अतिरिक्त भी ५ लकार हैं, ? ज्ञान करना भी यहां प्रकरणानुकूल आवश्यक होने के अति इसलिये भी उपयोगी है कि आप उनका प्रयोग चाहे करें न करें, परन्तु दूसरे लेखकों के लेखों में व्यवहृत उन लकार प्रयोगों का अर्थ समझ सकें, साथ ही उन्हें जान लेने पर भी प्रयुक्त कर ही सकेंगे।

भूतकाल में ३ लकार

भूतकाल में लुङ् के अतिरिक्त २ लकार लिट् लङ् के नाम से पुकारे जाते हैं। इनमें से (१) लिट् उस भूतकालिक क्रिया का सूचक है जो परोक्ष हो अ

दो (कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य) भेद होते हैं इसी प्रकार अकर्मक = कर्म रहित क्रियाओं के भी उक्त दो (कर्तृवाच्य और भाववाच्य) भेद हो जाते हैं।

(१) इन वाच्यों में से अंग्रेज़ी में केवल कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य ही होते हैं, भाववाच्य नहीं। (२) हिन्दी में कर्तृवाच्य में बोलना अच्छा समझा जाता है, संस्कृत में इस विषय में इस कर्मवाच्य और भाववाच्य को विशेष स्थान देते हैं। इसलिये उन वाच्यों में अभ्यास बढ़ाने के हेतु हमारे 'आदर्श संस्कृत शिक्षक' के भागों को पढ़ने पढ़ाने का यत्न करें

नोट—हम इस भाग में केवल कर्तृवाच्य में ही क्रिया का दे सकने के कारण छात्रों को यह बता देना आवश्यक समझते हैं कि कर्तृवाच्य में वाक्य बनाने में कारकों का कोई उलट फेर करना नहीं पड़ता, कर्ता को प्रथमा विभक्ति में रखा जाता है और कर्म को द्वितीया विभक्ति में। क्रिया का प्रयोग कर्ता के लिंग वचन और पुरुष के अनुसार चलता है।

पुरुष Person

पुरुष तीन प्रकार के हैं—प्रथम (अन्य) पुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष। यद्यपि अंग्रेज़ी में प्रथम को First कहते हैं फिर भी यहाँ यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि व्याकरण में प्रथम पुरुष अंग्रेज़ी का Third Person है न कि फ़र्स्ट। शेष दो यथाक्रम Second Person और Fist Person कहे जाते हैं। इन दोनों मध्यम और उत्तम पुरुष के सम्बन्ध में यह जानना चाहिये कि अस्मद् शब्द के कर्तृकारक के अहम् आवाम् वयं रूप उत्तम पुरुष के और युष्मद् शब्द के कर्तृकारक के त्वम् युवाम् यूयम् रूप मध्यम पुरुष के कहे जाते हैं। इन शब्दों का क्रिया के साथ लिखित या पठित प्रयोग हो

...ता न हो, इसके अनुरूप क्रिया का वैसा पुरुष माना जाता है जैसे त्वं पठसि अथवा स्वयं पठसि कहा जाने पर भी मध्यम पुरुष ही माना जायगा क्योंकि इसमें 'सि' इसी पद का द्योतक है। इन दोनों पुरुषों के अतिरिक्त शेष प्रथम पुरुष होते हैं इसलिए 'आप' वाचक संस्कृत का भवत् शब्द भी (जिसके रूप पु० में भवान् भवन्तौ भवन्तः और स्त्रीलिंग में भवती भवत्यौ भवत्यः हैं) मध्यम पुरुष न होकर प्रथम पुरुष होने से 'सि' 'थः' 'थ' इत्यादि वाले रूप न लेकर अपने साथ प्रथम पुरुष के 'ति' 'तः' 'न्ति' वाले रूप लेता है। और 'आप पढ़ते हैं' का अनुवाद भवान् पठसि न होकर भवान् पठति होगा। यही कारण है कि जहाँ किसी उच्चपदस्थ या महान् व्यक्ति को लक्ष्य करके उनके लिए देव, महाराज आदि प्रयुक्त किया जाता है वहाँ भी 'यथाऽऽज्ञापयति देवः' इत्यादि ढङ्ग से प्रथम पुरुष प्रयुक्त करते हैं।

गण।

संस्कृत में समस्त धातु रूप रचना के भेद से दस भागों में बाँटे गये हैं, इन्हें गण (Class) कहते हैं। उनके नाम ये हैं—

भ्वाद्यदादी जुहोत्यादिर्दिवादिः स्वादिरेव च।
तुदादिश्च रुधादिश्च तनादिक्र्यादिचुरादयः ॥

अर्थात्—१ भ्वादि, २ अदादि, ३ जुहोत्यादि, ४ दिवादि, ५ स्वादि, ६ तुदादि, ७ रुधादि, ८ तनादि, ९ क्र्यादि और १० चुरादि

इनको क्रम से प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम, षष्ठ, सप्तम, अष्टम, नवम, तथा दशम गण भी कहते हैं। इसी प्रकार अंग्रेजी में यह First conjucation Second conjugatiou इत्यादि कहे जाते हैं। गण का अर्थ 'समूह' है इसलिए भ्वादि — जिस समूह के आदि में भू = होना धातु है वह

भू धातु = होना

			प्रथमपुरुष			मध्यमपुरुष			उत्तमपुरुष		
			यह	ये दोनों	वे सब	तू	तुम दोनों	तुम सब	मैं	हम दोनों	हम सब
वर्तमान	लट्	होता है	भवति	भवतः	भवन्ति	भवसि	भवथः	भवथ	भवामि	भवावः	भवामः
आज्ञादि०	आशीःलोट्	होवे	भवतु	भवताम्	भवन्तु	भव	भवतम्	भवत	भवानि	भवाव	भवाम
आज्ञादि	विधिलिङ्	होवे	भवेत्	भवेताम्	भवेयुः	भवेः	भवेतम्	भवेत	भवेयम्	भवेव	भवेम
अनद्यतन-	भूतलङ्	हुआ	अभवत्	अभवताम्	अभवन्	अभवः	अभवतम्	अभवत	अभवम्	अभवाव	अभवाम
					बभूवुः				बभूव	बभूविव	बभूविम

	अनद्यतन भविष्यत् (लुट्)	सामान्य भूत (लुङ्)	आशीर्लिङ्	लृङ्
[illegible]	भविता	अभूत्	भूयात्	अभविष्यत्
	भवितारौ	अभूताम्	भूयास्ताम्	अभविष्यताम्
	भवितारः	अभूवन्	भूयासुः	अभविष्यन्
	भवितासि	अभूः	भूयाः	अभविष्यः
	भवितास्थः	अभूतम्	भूयास्तम्	अभविष्यतम्
	भवितास्थ	अभूत	भूयास्त	अभविष्यत
	भवितास्मि	अभूवम्	भूयासम्	अभविष्यम्
	भवितास्वः	अभूव	भूयास्व	अभविष्याव
	भवितास्मः	अभूम	भूयास्म	अभविष्याम

... के स्थान पर 'भवतात्' भी कह सकते हैं, जैसे—भवतात् अनुपमनोदः
... क्रम संकेत पर विशेष ध्यान दें।

(८) लुङ् लकार में धातुओं के रूप भू धातु के रूप से प्रायः भिन्न हैं। इसलिए हमने भ्‌ धातु के लुङ् के पूरे रूप दिये हैं। आगे के धातु—रूप प्रायः इसी ढङ्ग पर हैं। इसके प्रथम का आदीत् में से ईत् काटकर शेष भाग आत् में इष्टाम् इषुः इः इष्ट इष्ट इषम् इष्व और इष्म जोड़ कर पूरे रूप बनाने का ढङ्ग ध्यान में रखना चाहिए।

(ii) इस लकार के रूपों में जहाँ आरम्भ में अगादीत्, कागीत् ऐसे २ रूप लिखे गये हैं उन्हें केवल प्रथमपुरुष एक वचन में दो रूपों का बनना न समझ कर तीनों पुरुषों के तीनों वचनों में दो दो रूप बने हुए समझने चाहिएँ।

(९) आशीर्लिङ् के रूप बोलने के लिए दिये गये रूप में से 'यात्' काट कर शेष भाग में यास्ताम्, यासुः यास्तम्, यास्त, यासम्, यास्व, यास्म जोड़ना चाहिये।

(१०) लृङ् के रूप बोलने के लिए स्य अथवा स्यिस्यतुः स्य के पश्चात् लङ् वाले त् ताम् चिन्ह बढ़ाने चाहिएँ।

स्थान स्थान पर आगे भी हमने आत्मनेपदी धातु आदि के सम्बन्ध में जो परिवर्तन किये हैं, उन्हें बड़ी सावधान से हृद्गत रखना चाहिए।

इस भाग की उपयोगिता और अनुवाद बनाने के सम्बन्ध में।

इस भाग में दिये हुए संस्कृत वाक्यों का हिन्दी अनुवाद बना सकने के लिये यह आवश्यक है कि वह संस्कृत वाक्य उन कारक रूपों और क्रिया रूपों से सम्बद्ध हों जो संस्कृतशिक्षा के तीसरे भाग तक और इस भाग के इस अनुवाद वाक्य दिये जाने से पहले आचुके हों।

इसलिये—

हमने यह देखकर कि इस भाग तक का विद्यार्थी भाव-वाच्य और कर्मवाच्यकी वाक्य-रचना अथवा निष्ठा (क्त) प्रत्यय के कर्तृवाच्य से अबोध है, इस भाग में लकारों से सम्बद्ध कर्तृवाच्य वाक्यों को ही स्थान दिया है, साथ ही यह जान कर कि इन वाक्यों के बिना केवल कर्तृवाच्य में संस्कृत रचना कुछ श्रेष्ठ नहीं मानी जाती अथवा भूतकालिक लकारों के प्रयोगों की अपेक्षा निष्ठ (क्त) और क्तवतु के प्रयोग सहित वाक्य सुन्दर माने जाते हैं, दूसरे यह सोच कर कि अनुवाद के लिये कारक-रूप और समापिका (वाक्य को समाप्त करने वाली) क्रिया के रूपों के अतिरिक्त प्रायः सभी उपयोगी धातुओं के तुमुन् शतृ शानच् अनीयर् यत् प्रत्यय आदि के रूप आवश्यक हैं, जहां हम उस निमित्त छात्रों को अगले परिवर्धित-भाग देखने की प्रेरणा करेंगे, वहाँ यह लिखना उचित समझते हैं कि—

संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद बनाने के लिए-

(१) सब से पहिले अध्येता अपने मस्तिष्क-बल का प्रयोग कर सन्धि विच्छेद करने और साथ ही यह सोचते हुए कि किस प्रातिपदिक का किस किस विभक्ति में यह रूप बनता है और उनमें से यहां यह कौनसी विभक्तिका रूप उपयोगी है, वाक्य के एक एक शब्द को पृथक् पृथक् कर उसके अर्थ लगाने का प्रयत्न करें और फिर आगे संस्कृत बनाने के लिये दिये हुए हिंदी मूलवाक्य से अपने उस अर्थ की जांच करें।

(२) सम्भव है कि संस्कृत वाक्यों में कुछ ऐसे भी शब्द आगये हों जिनकी हिंदी तक पढ़ने में न आई हो, तो हि

२ अत = निरन्तर चलना ।

लट्–अतति । लिट्–आत आततुः आतुः । आतिथ आतथुः आत । आत आतिव आतिम । लुट्–अतिता० । लृट् अतिष्यति । लोट्–अततु० । लङ्–आतत् आतताम् आतन् । आतः आततम् आतत । आतम् आतव आतम । विधिलिङ्–अतेत्० । आ० लिङ्–अत्यात् अत्यास्ताम् अत्यासुः अत्याः अत्यास्तम अत्यास्त । अत्यासम् अत्यास्व अत्यास्म । लुङ्—आतीत् आतिष्टाम् आतिषुः । आतीः आतिष्टम् आतिष्ट । आतिषम् आतिष्व आतिष्म । लृङ् आतिष्यत्० ।

३ षिध = जानना, जाना, प्रापण

लट्–सेधति । लिट्—सिषेध सिषिधतुः सिषिधुः । सिषेधिथ सिषिधथुः सिषिध । सिषेध सिषिधिव सिषिधिम । लुट्–सेधिता । लृट् सेधिष्यति । लोट्—सेधतु । लङ्–असेधत् असेधताम् असेधन् । असेधः असेधतम् असेधत । असेधम् असेधाव असेधाम । विधिलिङ्—सेधेत् । आशीर्लिङ्—सिध्यात् सिध्यास्ताम् सिध्यासुः । लुङ्—असेधीत् असेधिष्टाम् असेधिषुः । लृङ्—असेधिष्यत् ।

४ चिती = जानना, स्मरण ।

लट—चेतति । लिट् चिचेत चिचिततुः चिचितुः । चिचेतिथ चिचितथुः चिचित । चिचेत चिचितिव चिचितिम ॥ लुट—चेतिता । लृट्—चेतिष्यति ॥ चेततु । अचेतत् चेतेत् । चित्यात् चित्यास्ताम् चित्यासुः । अचेतीत् अचेतिष्टाम अचेतिषुः । अचेतिष्यत ।

शुच = शोक, सोच करना ।

शोचति । शुशोच शुशुचतुः शुशुचुः , शुशोचिथ शुशुचथुः

देख कर प्रयत्न पूर्वक उन शब्दों को उनके अर्थ सहित अपने स्मृति या नोटबुक में चढ़ा लें।

हिंदी से संस्कृत में अनुवाद बनाने के लिये

(१) इस बात को अपने मन से निकाल कर अनुवाद बनाना चाहिये कि संस्कृत से भाषा बनाते समय का तो है इस हिंदी वाक्य का संस्कृत वाक्य कण्ठस्थ ही है।

(२) अपने संस्कृतानुवाद में पहिले दिये संस्कृत-वाक्यान्तर्गत शब्दों से भिन्न शब्दों का प्रयोग करने का अभ्यास किया जावे। परन्तु उनके रूपों को आदर्श वाक्य के कारक रूपों से मिलाया जावे।

(३) अपने संस्कृतानुवाद को बिना सन्धि की दशा में रख कर, फिर उस पर सन्धि नियमों का प्रयोग कर उसे आदर्श संस्कृत वाक्यों से मिलाया जावे।

(४) पुस्तकस्थ ६ १० अभ्यास-वाक्यों के संस्कृत या भाषानुवाद पर सन्तोष न कर उपर्युक्त शब्दों द्वारा उस उस अभ्यास में पचासों वाक्य बनाये जावें क्योंकि एक एक धातु के कम से कम ६० और एक एक प्रातिपदिक के २० से ऊपर रूप बनने से इतनी सामग्री के आधार पर भी पर्याप्त अनुवाद बनाया जा सकता है और बनाना चाहिये।

यह आवश्यक नहीं कि 'घृत सामग्री से अग्नि में हवन करता है' का अनुवाद 'जुहोति हव्येन हिरण्यरेतसम्' ही बनाया जावे किन्तु जहां यह वाक्य भी स्मरण में रहे वहां इस का दूसरा परन्तु शुद्ध संस्कृतानुवाद 'जुहोति हव्येन जातवेदसम्' या 'जुहोति हुतभुजं हव्येन' या 'आशुशुक्षणिं हव्येन जुहोति' अथवा अग्निमनलं हव्येन जुहोति आदि बनाया जा सके।

२ अत = निरन्तर चलना ।

लट्–अतति । लिट्–आत आततुः आतुः । आतिथ आतथुः आत । आत आतिव आतिम । लुट्–अतिता० । लृट् अतिष्यति । लोट्–अततु० । लङ्–आतत् आतताम् आतन् । आतः आततम् आतत । आतम् आतव आताम । विधिलिङ्–अतेत्० । आशीर्लिङ्–अत्यात् अत्यास्ताम् अत्यासुः । अत्याः अत्यास्तम् अत्यास्त । अत्यासम् अत्यास्व अत्यास्म । लुङ्—आतीत् आतिष्टाम् आतिषुः । आतीः आतिष्टम् आतिष्ट । आतिषम् आतिष्व आतिष्म । लृङ् आतिष्यत्० ।

३ षिध = जानना, जाना, प्रापण

लट्–सेधति । लिट्—सिषेध सिषिधतुः सिषिधुः । सिषेधिथ सिषिधथुः सिषिध । सिषेध सिषिधिव सिषिधिम । लुट्–सेधिता । लृट् सेधिष्यति । लोट्—सेधतु । लङ्–असेधत् असेधताम् असेधन् । असेधः असेधतम् असेधत । असेधम् असेधाव असेधाम । विधिलिङ्—सेधेत् । आशीर्लिङ्—सिध्यात् सिध्यास्ताम् सिध्यासुः । लुङ्—असेधीत् असेधिष्टाम् असेधिषुः । लृङ्—असेधिष्यत् ।

४ चिती = जानना, स्मरण ।

लट—चेतति । लिट् चिचेत चिचिततुः चिचितुः । चिचेतिथ चिचितथुः चिचित । चिचेत चिचितिव चिचितिम ॥ लुट्—चेतिता । लृट्—चेतिष्यति ॥ चेततु । अचेतत् चेतेत् । चित्यात् चित्यास्ताम् चित्यासुः । अचेतीत् अचेतिष्टाम अचेतिषुः । अचेतिष्यत् ।

शुच = शोक, सोच करना ।

शोचति । शुशोच शुशुचतुः शुशुचुः, शुशोचिथ शुशुचथुः

ज्ञायते ? । नगराणि ग्रामाणि संस्कृतान्यपि सन्ति । एत बालकानां चरितं दोषाःयति । तेषां वाक्यानि शोभनानि पवित्राणि अनुकरणीयानि च विद्यन्ते ।

(अभ्यास ६)

संस्कृत बनाओ ।

शहर की चीजें सुन्दर होती हैं । गाँव की हवा ठंडा बहना जानता है । उसने कहा है कि कल इसके घर पर हवन होगा । कल यहाँ पर वर्षा न हुआ । जब मैं जाऊँ तब तुम यहाँ होना । ईश्वर करे आप विद्यावान धनवान् बली होवें । यदि तुम पढ़ने में मेहनत करोगे तो जल्द विद्वान होजाओगे । पहाड़ के फल मीठे होते हैं । क्या यहाँ के मिट्टी के बर्तन अच्छे होते हैं ? यहाँ के सब मन्दिर पत्थर के हैं । इन लड़कों का चालचलन कैसा है ? इनके वाक्य सुन्दर पवित्र और अनुकरण करने के योग्य हैं ।

६ गद = स्पष्ट बोलना ।

गदति । जगाद जगदतुः जगदुः जगदिथ जगदथुः जगद, जगाद—जगद जगदिव जगदिम । गदिता । गदिष्यति । गदतु । अगदत् । गदेत् । गद्यात् । अगादीत् । अगदिष्यत् ।

७ णद = घटादि का शब्द जो समझ में न आसके ।

नदति । ननाद, नेदतुः नेदुः । नदिता । नदिष्यति । नदतु अनदत् । नदेत् । नद्यात् । अनादीत् अनदीत्, अनादिष्टाम्, अनदिष्टाम् अनादिषुः, अनदिषुः, अनदिष्यत् ।

८—टु—नदि = फलना, फूलना आनन्द होना

नन्दति । ननन्द ननन्दतुः ननन्दुः । ननन्दिथ । नन्दिता ।

गोपायेत् गोपायेताम् गोपायेयुः। आ० लि० (१) गो[illegible] गोपाय्यास्ताम् गोपाय्यासुः (२) गुप्यात् गुप्यास्ताम् गुप्यासुः। लुङ् (१) अगोपायीत् (२) अगोपीत् (३) अगौप्सीत् अगौप्ताम् अगौप्सुः। अगौप्सीः अगौप्तम् अगौप्त। अगौप्सम् अगौप्स्व अगौप्स्म। लृङ् (१) अगोपायिष्यत् (२) अगोपिष्यत् (३) अगोप्स्यत्।

१३—क्षि = नाश होना

क्षयति। चिक्षाय चिक्षियतुः चिक्षियुः चिक्षयिथ–चिक्षेथ चिक्षियथुः चिक्षिय। चिक्षाय–चिक्षय चिक्षियिव चिक्षियिम क्षेता। क्षेष्यति। क्षयतु। अक्षयत्। क्षयेत्। [illegible] क्षीयासुः। अक्षैषीत् अक्षैष्टाम् अक्षैषुः * १। अक्षेष्यत्।

१४—तप = तपना, जलना

तपति। तताप तेपतुः तेपुः, तेपिथ–ततप्थ तेपथुः तेप तताप–ततप तेपिव तेपिम। तप्ता। तप्स्यति। तपतु। अतपत्। तपेत्। तप्यात्। अताप्सीत् अताप्ताम् अताप्सुः। अताप्सीः अताप्तम् अताप्त। अताप्सम् अताप्स्व अताप्स्म। अतप्स्यत्।

१५–क्रमु = टहलना, चलना

* २ क्राम्यति, क्रामति। चक्राम चक्रमतुः चक्रमुः। चक्रमिथ चक्रमथुः चक्रम। चक्राम–चक्रम चक्रमिव चक्रमिम। क्रमिता। क्रमिष्यति। * २ क्राम्यतु, क्रामतु। *२ अक्राम्यत्, अक्रामत् *२ क्राम्येत्, क्रामेत्। क्रम्यात् क्रम्यास्ताम् क्रम्यासुः। अक्रमीत् अक्रमिष्टाम् अक्रमिषुः।। अक्रमिष्यत्।

---

* १ अक्षैषीः. अक्षैष्टम् अक्षैष्ट अक्षैषम् अक्षैष्व अक्षैष्म।

* २ प्रथमपुरुष के एक वचन में दिये हुए दो दो रूप इस धातु के लट् लोट् लङ् और विधिलिङ् में भी सर्वत्र दो दो रूप अर्थात् ९×२ = १८ १८ रूप बनने की सूचना दे रहे हैं।

विधिलिङ–एधेत एधेयाताम् एधेरन्, एधेथाः एधेयाथाम् एधे-ध्वम् एधेय एधेवहि एधेमहि । आशीर्लिङ–एधिषीष्ट एधिषीया-स्ताम् एधिषीरन् एधिषीष्ठाः एधिषीयास्थाम् एधिषीध्वम् एधि-षीय एधिषीवहि एधिषीमहि । लुङ–ऐधिष्ट ऐधिषाताम् ऐधिषत ऐधिष्ठाः ऐधिषाथाम् ऐधिढ्वम् * ऐधिषि ऐधिष्वहि ऐधिष्महि लृङ–ऐधिष्यत ऐधिष्येताम् ऐधिष्यन्त ऐधिष्यथाः ऐधिष्येथाम् ऐधिष्यध्वम् ऐधिष्ये ऐधिष्यावहि ऐधिष्यामहि ।

❀ कमु–इच्छा करना ।

कामयते । कामयाञ्चक्रे * कामयाम्बभूव कामयामास चकमे चकमाते चकमिरे चकमिषे चकमाथे चकमिध्वे चकमे चकमिवहे चकमिमहे । कामयिता । कमिता । कामयिष्यते कमिष्यते । कामयताम् । अकामयत । कामयेत । कामयिषीष्ट कमिषीष्ट । लुङ * अचीकमत अचीकमेताम् अचीकमन्त अचीकमथाः अचीकमेथाम् अचीकमध्वम् अचीकमे अचीकमावहि अचीकमामहि * अचकमत अचकमेताम् अचकमन्त । अकामयिष्यत, अकमिष्यत ।

२ अय–जाना ।

अयते प्लायते, पलायते । अयाञ्चक्रे अयाम्बभूव, अयामास । अयिता । अयिष्यते । अयताम् । आयत । अयेत । अयिषी

* इड्भिन्न एव इणिदृश्यते इति मतेनु 'ऐधढ्वम्' इ सिद्धान्तकौमुद्याम् ।

* लिट् में इसके ९ × ४ = ३६ रूप बनते हैं और लुट्, आशीर्लिङ, लुङ तथा लृङ में १८ १८ ।

* [illegible] के लुङ में [illegible] आत्मने [illegible] [illegible] अचीकमत अचीकमेताम् [illegible] अचीकमे अचीकमावहि [illegible] है वहाँ चिन्ह [illegible] धातु के [illegible] अचीकमत अचीकमेताम् में [illegible] चाहि

आयपीयास्ताम् आयपीरन । आयिष्ट आयिषाताम् आयि-
आयिष्यत आयिष्येताम् आयिष्यन्त।

द्युत = प्रकाश, चमक *।

द्योतते । दिद्युते दिद्युताते दिद्युतिरे दिद्युतिषे दिद्युता-
द्योतताम्। अद्योतत। द्योतेत। द्योतिषीष्ट । द्योतिता। द्योतिष्य-
द्योताम् अद्योतिषत। अद्युतत्। अद्योतिष्यत।

५ श्विता = वर्ण, रंगना *।

श्वेतते । शिश्विते शिश्विताते शिश्वितिरे शिश्वितिषे
शिश्विताथे शिश्वितिध्वे शिश्विते शिश्वितिवहे शिश्वितिमहे।
श्वेतिता। श्वेतिष्यते। श्वेतताम्। अश्वेतत। श्वेतेत। श्वेति-
षीष्ट। अश्वेतिष्ट अश्वेतिषाताम् अश्वेतिषत। अश्विदत् अश्वि-
तताम् अश्वितन् अश्वितः अश्वितम् अश्वितत अश्वितम्
अश्विताव अश्विताम। अश्वेतिष्यत।

६ ञिमिदा = स्नेह । मिलना,

मेदते मिमिदे । मेदिता। मेदिष्यते । मेदताम्। अमेदत।
मेदेत। मेदिषीष्ट। अमेदिष्ट, अमिदत्। अमेदिष्यत।

७ ञिष्विदा = चिकना, त्याग।

स्वेदते । सिष्विदे । स्वेदिता । स्वेदिष्यते । स्वेदताम् ।
स्वेदत। स्वेदेत । स्वेदिषीष्ट। अस्वेदिष्ट, अस्विदत् अस्विद-
अस्विदन। अस्वेदिष्यत।

* द्युत से लुट् धातु तक के लुङ के रूप इस प्रकार परस्मैपदी भी
हैं। अद्युतत् अद्युतताम्—अद्युतन् अद्युतः अद्युततम् अद्युतत
अद्युताम् अद्युताव अद्युताम।

ञिक्ष्विदा = चिकना, मोचन ।

क्ष्वेदते । चिक्ष्विदे । क्ष्वेदिता । क्ष्वेदिष्यते । क्ष्वेदताम् । अक्ष्वेदत । क्ष्वेदेत । क्ष्वेदिषीष्ट । अक्ष्वेदिष्ट, अक्ष्विदत् । अक्ष्वेदिष्यत ।

९ रुच = प्रकाश, अभिप्रीति, अच्छा लगना ।

रोचते । रुरुचे रुरुचाते रुरुचिरे रुरुचिषे रुरुचाथे रुरुचिध्वे रुरुचे रुरुचिवहे रुरुचिमहे । रोचिता । रोचिष्यते । रोचताम् । अरोचत । रोचेत । रोचिषीष्ट । अरोचिष्ट, अरुचत् । अरोचिष्यत ।

१० घुट = घोटना व चलना ।

घोटते । जुघुटे । घोटिता । घोटिष्यते । घोटताम् । अघोटत । घोटेत । घोटिषीष्ट । अघोटिष्ट, अघुटत् । अघोटिष्यत ।

(अभ्यास ७)

भाषा बनाओ ।

अस्य वनस्य वृक्षाः स्वयमेवैधन्ते । भारतीयाः प्राचीनाः क्षत्रिया किं कामयाञ्चक्रिरे । श्वो युष्मासु को युद्धायाऽयिता ! आकाशे भानुर्द्योतते । मदीयोऽयं शाटः कथं भेदताम् । वयं ते च इमे मर्त्या श्वो यः समितिमायितास्महे । मोदकास्ते न रोचन्ते । ! किं घोटामहे गौरवम् ।

(अभ्यास ८)

संस्कृत बनाओ ।

इस वन के वृक्ष अपने आप बढ़ते हैं । भारतवर्ष के प्राचीन क्षत्रियों ने क्या चाहा ? कल तुम में से कौन युद्ध के लिये जावेगा ? व्योम में सूर्य चमकता है । यह मेरा कपड़ा क्यों

विकना होवे ? हम और वे सब मनुष्य कल तुम्हारी सभा आवेंगे। लड्डू तुझे अच्छे नहीं लगते। क्या हम दूधा न घोटें।

११ शुभ = शोभा, अच्छा लगना।

शोभते। शुशुभे। शोभिता शोभिष्यते। शोभताम्। अशोभत। शोभेत। शोभिषीष्ट। अशोभिष्ट अशुभत्। अशोभिष्यत।

१२ क्षुभ = व्याकुलता, कांपना, क्षोभ।

क्षोभते। चुक्षुभे। क्षोभिता। क्षोभिष्यते। क्षोभताम्। अक्षोभत। क्षोभेत। क्षोभिषीष्ट। अक्षोभिष्ट। अक्षुभत्। अक्षोभिष्यत।

१३ णभ = हिंसा, दुःख देना।

नभते। नेभे। नभिता। नभिष्यते। नभताम्। अनभत। नभेत। नभिषीष्ट। अनभिष्ट, अनभत्। अनभिष्यत।

१४ तुभ = हिंसा।

तोभते। तुतुभे तोभिता। तोभिष्यते। तोभताम्। अतोभत। तोभेत। अतोभिष्ट, अतुभत् तोभिषीष्ट, अतोभिष्यत।

१५ स्रंसु = रपटना गिरना।

स्रंसते। सस्रंसे। स्रंसिता। स्रंसिष्यते। स्रंसताम्। अस्रंसत। स्रंसेत। स्रंसिषीष्ट। अस्रंसिष्ट, अस्रसत्। अस्रंसिष्यत।

१६ भ्रंसु = नाश, नीचे गिरना।

भ्रंसते। बभ्रंसे। भ्रंसिता। भ्रंसिष्यते। भ्रंसताम्। अभ्रंसत। भ्रंसेत। भ्रंसिषीष्ट। अभ्रंसिष्ट, अभ्रसत्। अभ्रंसिष्यत।

१७ ध्वंसु = जाना गिरना।

ध्वंसते। दध्वंसे। ध्वंसिता। ध्वंसिष्यते। ध्वंसताम्। अध्वंसत। ध्वंसेत। ध्वंसिषीष्ट। अध्वंसिष्ट, अध्वसत्। अध्वंसिष्यत

१८–स्रंभु = विश्वास, भरोसा।

स्रंभते सस्रंभे। स्रंभिता। स्रंभिष्यते। स्रंभताम्। अस्रंभत। स्रंभेत। स्रंभिषीष्ट। अस्रंभिष्ट, अस्रंभत्। अस्रंभिष्यत।

१९–वृतु = वर्तना, होना।

वर्तते। ववृते। वर्तिता। वर्तिष्यते * वर्त्स्यति, वर्त्स्यन्ति। वर्तताम्। अवर्तत। वर्तेत। वर्तिषीष्ट। अवृतत्। अवर्तिष्यत, अवर्त्स्यत्।

२०–दद = देना।

ददते। दददे ददहाते ददहिरे। दददिषे ददहाथे ददहिध्वे ददहे दददिवहे दददिमहे। ददिता। ददिष्यते ददताम्। अददत। ददेत। ददिषीष्ट। अददिष्ट। अददिष्यत।

कक्षः = फूँस। मञ्जुलम् = मनोहर। पलाण्डुः = प्याज। लशुनम् = लहसन। ताम्बूलाधानम् = पानदान। सरटः = गिरगिट। प्रतीरम् = किनारा। प्रसाधनम् = सजावट। मज्जनम् = नहाना। नौवाहः = मल्लाह। शाकटवाहः = गाड़ीवान। रथवाह = रथवान। हलवाहः = हलवाला। पलाटः = मुद्ग, मूँग। बालिशः = बेवकूफ। प्रणाली = पनाला। वल्लकी = बीन। वल्लरी = बेल। गोष्ठी = सभा। भोज्यम् = खाने योग्य व[स्तु]

(अभ्यास ६)

भाषा बनाओ

(१) मूर्खोऽपि शोभते तावद् यावत् किञ्चिन्न भाषते

---

* इस धातु के लृट् और लङ् में ६ रूप वर्तिष्यते के ढंग से आत्मनेपद में और वर्त्स्यति के ढंग से ६ परस्मैपद चलेंगे।

ाछुमे छिपतां मनः । (३) गजं गमने पैदली । (४) स्त्रं नि-
पादोऽस्र (५) दर्पेण श्रंसमे ज्ञानी, मानी ध्वंसने सुखात् ।
स्र मेऽहं त्वयि सर्वदा ७ भक्तिनेऽपि लशुने न ग्रान्तो
ः । ८ सीवाहः नाहं धतन्ते हलवाहस्य सन्निधौ । (६)
ग्रा बालका मूर्खम् ।

(अभ्यास १०)

संस्कृत बनाओ ।

(१) मूर्ख भी तब तक अच्छा लगता है जब तक कुछ
ता नहीं (२) वैरियों का मन लुब्ध हुआ (३) सिंह हाथी
मारता है । (४ यहां पैर रपटेगा । (५) अहंकार से ज्ञानी
होता है और घमण्डी सुख से नीचे गिरा करता है ।
मैं तुम्हारा सदा भरोसा रखता हूँ (७) लहसन खाने पर
रोग शान्त नहीं हुआ (८) हल चलाने वाले के समीप
नाद नहीं हैं । (९) बच्चो तुम मूर्ख हो ।

२१ त्रपूष् = लज्जा शरम ।

त्रपते । त्रेपे । त्रपिता, त्रप्ता । त्रपिष्यते, त्रप्स्यते । त्रपताम् ।
त्रपत । त्रपेत । *त्रपिषीष्ट, त्रप्सीष्ट । अत्रपिष्ट अत्रपिषाताम्
त्रपिषत, अत्रप्त अत्रप्साताम् । अत्रप्सत । * अत्रपिष्यत्
त्रप्स्यत ।

---

*अत्रप्थाः अत्रप्साथाम् अत्रप्ध्वम् अत्रप्सि अत्रप्स्वहि
त्रप्स्महि ।

* आशीर्लिङ् और लुङ् के पहले रूप में जहाँ त्रपिषीष्ट
ौर अत्रपिष्ट की भाँति इषीष्ट और इष्ट हो वहाँ के रूप तो एधिषीष्ट की
ाँति आगे बढ़ालें किन्तु जहाँ ऐसा न हो त्रप्सीष्ट या अत्रप्त की
ाँति भिन्न प्रकार के रूप हैं वहाँ के पूरे रूपों को छात्रों को ध्यान
ना चाहिए ।

अथोभयपदप्रकरणम् ।

१ श्रिञ् = सेवा, सहारा लेना ।

श्रयते, श्रयति । शिश्रिये शिश्रियाते शिश्रियिरे, शि शिश्रियाथे शिश्रियिध्वे । शिश्रिये शिश्रियिवहे शि शिश्राय शिश्रियतुः शिश्रियुः शिश्रियिथ शिश्रियथुः शिश्राय=शिश्रय शिश्रियिव शिश्रियिम । ... श्रयितासे तासि । श्रयिष्यते, श्रयिष्यति । श्रयताम्, श्रयतु । अश्रयत् । श्रयेत श्रयेत्। श्रयिषीष्ट, श्रीयात् । * अशिश्रियत अशिश्रियेताम् अशिश्रियन्त अशिश्रियथाः अशिश्रियेथाम् श्रियध्वम् अशिश्रिये अशिश्रियावहि अशिश्रियामहि । श्रियत् अशिश्रियताम् अशिश्रियन् * अश्रयिष्यत, अश्रयिष्य

२ भृञ् = भरण, पोषण, पालन ।

भरते भरति । बभ्रे बभ्राते बभ्रिरे बभृषे बभ्राथे बभ्रे बभृवहे बभृमहे । बभार बभ्रतुः बभ्रुः बभर्थ बभ्रथुः बभार=बभर बभृव बभृम । ... भर्तासे भर्तासि । भरि भरिष्यति । भरताम्, भरतु । अभरत अभरत् । भरेत, भ भृषीष्ट भ्रियात् । लुङ्—अभृत अभृषाताम् अभृषत, अ अभृषाथाम् अभृढ्वम्, अभृषि अभृष्वहि अभृष्महि । र्षीत् अभार्ष्टाम् अभार्षुः अभार्षीः अभार्ष्टम् अभार्ष्ट अ अभार्ष्व अभार्ष्म, अभरिष्यत, अभरिष्यत् ।

३ हृञ् = हरण चुराना ।

हरते, हरति । जह्रे जह्राते जह्रिरे जह्रिषे जह्राथे ज जह्रे । जह्रिवहे जह्रिमहे । जहार जह्रतुः जह्रुः जहर्थ जह्रथु

× इस प्रकार के लुङ् के रूप बनाने के लिये अशिश्रिय भाग वाले त् तम् वाले भाग जोड़ देने चाहिएँ ।

ार ~ जहर जहृव जहृम । हर्तासे, हर्तास्मि । हरिष्यते हरि-
ति । हरताम् । हरतु । अहरत, अहरत् । हरेत, हरेत् । हृषीष्ट
यात् । अहृत * अहार्षीत् । अहरिष्यत । अहरिष्यत् ।

४ धृञ् = धारण, रखना ।

धरते, धरति । दध्रे दध्राते दध्रिरे, दधार दध्रतुः दध्रुः ।
र्तासे, धर्तास्मि । धरिष्यते, धरिष्यति । धरताम् धरतु । अध-
।, अधरत् । धरेत धरेत् । धृषीष्ट, ध्रियात् । अधृत, अधार्षीत्
।धरिष्यत, अधरिष्यत ।

५ णीञ् = प्रापण, लेजाना ।

नयते, नयति । निन्ये निन्याते निन्यिरे, निनाय निन्यतुः
न्युः । नेतासे, नेतास्मि । नेष्यति । नयताम्, नयतु ।
नयत, अनयत् । नयेत, नयेत् नेषीष्ट, नीयात् । अनेष्ट अनेषा-
म्, अनेषत । अनैषीत् अनैष्टाम् अनैषुः । अनेष्यत, अनेष्यत् ।

६ डुपचष् = पकाना ।

पचते, पचति । पेचे पेचाते पेचिरे, पपाच पेचतुः पेचुः ।
क्तासे, पक्तास्मि । पक्ष्यते. पक्ष्यति । पचताम्, पचतु । अपचत,
अपचत् । पचेत, पचेत् । पक्षीष्ट, पच्यात् । अपक्त अपक्षाताम्
अपक्षत अपक्थाः अपक्षाथाम् अपग्ध्वम्, अपक्षि अपक्ष्वहि
अपक्ष्महि । अपाक्षीत् अपाक्ताम् अपाक्षुः । अपाक्षीः अपाक्तम्
अपाक्त अपाक्षम अपाक्ष्व अपाक्ष्म । अपक्ष्यत, अपक्ष्यत् ।

७ भज = सेवा, भजन ।

भजते, भजति । भेजे भेजाते भेजिरे बभाज भेजतुः भेजुः ।

---

८ और ९ के आशीर्लिङ् और लुङ् के रूप भृञ् के समान है ।

भक्तासे, भक्तासि। भक्ष्यते, भक्ष्यति। भजताम्, भजतु। अभजत, अभजत्। भजेत, भजेत्। भक्षीष्ट। भज्यात्। अभक्ताताम् अभक्षत। अभक्थाः अभक्षाथाम् अभग्ध्वम्। अभक्ष्वहि अभक्ष्महि। अभाक्षीत् अभाक्ताम् अभाक्षुः। अभक्ष्यत्।

८ यज = देवपूजा, सङ्गतिकरण, दान।

यजते, यजति। ईजे ईजाते ईजिरे, ईजिषे ईजाथे ईजे ईजिवहे ईजिमहे। इयाज ईजतुः ईजुः इयजिथ, ईजथुः ईज, इयाज, इयज ईजिव ईजिम। यष्टासे, यष्टासि। यक्ष्यते, यक्ष्यति। यजताम्, यजतु। अयजत, अयजत्। यजेत, यजेत्। यक्षीष्ट, इज्यात्। अयष्ट अयक्षाताम् अयक्षत, अयष्ठाः अयक्षाथाम् अयड्ढ्वम् अयक्षि अयक्ष्वहि अयक्ष्महि अयाक्षीत् अयाष्टाम् अयाक्षुः। अयक्ष्यत अयक्ष्यत्।

९ वह = लेजाना, पहुँचाना, ढोना।

वहते, वहति। ऊहे ऊहाते ऊहिरे ऊहिषे ऊहाथे ऊढ्वे ऊहे ऊहिवहे ऊहिमहे, उवाह ऊहतुः ऊहुः। उवहिथ, उवोढ ऊहथुः ऊह। उवाह, उवह ऊहिव ऊहिम। वोढा वोढारौ वोढारः वोढासे वोढासाथे वोढाध्वे वोढाहे वोढास्वहे वोढास्महे, वोढासि, वोढास्थः। वक्ष्यते, वक्ष्यति। वहताम्, वहतु। अवहत अवहत्। वहेत, वहेत्। वक्षीष्ट, उह्यात्। लुङ्—अवोढ अवक्षाताम् अवक्षत, अवोढाः अवक्षाथाम् अवोढ्वम्, अवक्षि अवक्ष्वहि अवक्ष्महि। अवाक्षीत् अवोढाम् अवाक्षुः, अवाक्षीः अवोढम् अवोढ अवाक्षम् अवाक्ष्व अवाक्ष्म। अवक्ष्यत, अवक्ष्यत्।

पारिषद्ः-परिषदः-मनुष्यः=सभासद्-मेम्बर। प्रश्रयः=प्रेम, मोहब्बत। बीजम्=कारण। समारम्भः=आरम्भ

ारी । ससम्भ्रमम् = आदर से । प्रगुणम् = शुद्ध । उपकण्ठम्
समीप । आवर्तनम् = विलोडन । अन्तरालम् = मध्य, बीच ।
णम् = आँगन । विभ्रमः = विलास । शीतः = शीतल, ठण्डा ।
चम् = संकोच । पाण्डित्यम् = चतुराई । उपाधानम् =
ना ढाल ध्यान करना । नियोगः = आज्ञा । शमनम् = शान्ति ।

(अभ्यास ११)

भाषा बनाओ ।

ससम्भ्रमं न सेवते स्वामिनम् । काकोऽप्युदरं स्वम्भरते ।
ते यो धुरं धर्म्यां तस्य राज्यं प्रतिष्ठते । पाकान् पचन्ति
चकाः । भारं वहन्ति गर्दभाः । अग्ने ! नय सुपथा राये ।
ोपकण्ठे न वहन्ति नद्यः । नयान्तराले घटकः प्रयाति ।

(अभ्यास १२)

संस्कृत बनाओ

वह आदर के साथ स्वामी की सेवा नहीं करता । कौवा भी
पने पेट को भर लेता है । धर्मयुक्त जो धुरा को धारण करता
उसका राज्य चिरकाल तक ठहरता है । रसोइये पाक पकाते
! गदहे भार को ढोते हैं । हे परमात्मन् ! धर्मरूपी धन के
ये अच्छे मार्ग से ले चल । मेरे पास नदियाँ नहीं बहती हैं ।

इति भ्वादिगणप्रकरणम् ।

अथादादिगणप्रकरणम् ।

अद् = खाना ।

लट्-अत्ति अत्तः अदन्ति, अत्सि अत्थः अत्थ, अद्मि अद्वः
द्मः । लिट् । आद आदतुः आदुः आदिथ, आदथ आदथुः आद,
ाद आदिम आदिम । जघास जक्षतुः जक्षुः जघसिथ जक्षथुः

[नात् युनाम् युचन्तु युहि युनात् युनम् युत, यवानि यवाव
[णाम। अयौत् अयुताम् अयुवन्, अयोः अयुतम् अयुत अयु-
म् अयुव अयुम। युयात् युयाताम् युयुः युयाः युयातम्
युयात युयाम् युयाव युयाम। यूयात् यूयास्ताम् यूयासुः।
अयावीत् अयाविष्टाम् अयाविषुः अयावीः अयाविष्टम् अया-
विष्ट अयाविषम अयाविष्व अयाविष्व अयाविष्म। अयाविष्यत्।

४ या = प्रापण, पाना पहुँच जाना।

याति यातः यान्ति, ययौ ययतुः ययुः ययिथ ययाथ ययथुः
यय, ययौ ययिव ययिम। याता। यास्यति। यातु यातात
याताम् यान्तु, याहि, यातात् यातम् यात, यानि याव याम।
अयात् अयाताम् अयुः, अयान् अयः अयातम् अयात, अयाम्
अयाव अयाम। यायात् यायाताम् यायुः यायाः यायातम्
यायात, यायाम् यायाव यायाम। यायात् यायास्ताम् यायासुः।
अयासीत् अयासिष्टाम् अयासिषुः अयासीः अयासिष्टम् अया-
सिष्ट, अयासिषम् अयासिष्व अयासिष्म। अयास्यत्।

५ घ्रा = गन्धि, सूँघना।

घ्राति। घघौ जघ्रतुः घघ्रुः। घ्राता। घ्रास्यति। घ्रातु
अघ्रात। घ्रायात घ्रायाताम् घ्रायुः। घ्रायात् घ्रायास्ताम् घ्रायासुः।
अघ्रासीत् अघ्रासिष्टाम् अघ्रासिषुः। अघ्रास्यत्।

(अभ्यास १२)

संस्कृत बनाओ।

आप घोड़े को मारते हैं और आप पाठशाला को जाते हैं।
मैं आज चारों चोरों को अवश्य ही मारूँगा। विद्वानों में मूर्खों
को क्यों मिलाते हो। कल मैं शाम को प्रयाग पहुँचूँगा।

चलती हैं और चलेंगी। हमने इन लड़कों को कभी भी मारा। हमने दुश्मन को लड़ाई में मारा।

(अभ्यास १४)

भाषा बनाओ।

नेमे अद्य बालाः नेमे पाठशालां प्रयान्ति। अथ अहं चोरान् हनिष्यामि। विप्राः मूर्खान् घ्नन्ति। मृगम्। अहं यास्यामि। वायवो वान्ति वास्यन्ति। इमान् बालान् वयं कदापि नावधिष्म। स शत्रुं रणे अवधीत्। कथं हनिष्यसि त्वं मित्राणि?

६ भा = प्रकाश, चमक, रोशनी।

भाति भातः भान्ति। बभौ बभतुः बभुः। भाता। भास्यति। भातु। अभात्। भायात् भायाताम् भायुः। भायात् भायास्ताम् भायासुः। अभासीत् अभासिष्टाम् अभासिषुः। अभास्यत्।

७ ष्णा = पवित्रा, स्नान नहाना।

स्नाति। सस्नौ सस्नतुः सस्नुः। स्नाता। स्नास्यति। स्नातु। अस्नात्। स्नायात् स्नायाताम् स्नायुः। स्नायात् स्नायास्ताम् स्नायासुः, स्नेयात् स्नेयास्ताम् स्नेयासुः। अस्नासीत् अस्नासिष्टाम् अस्नासिषुः। अस्नास्यत्।

८ श्रा = पकाना।

श्राति। शश्रौ शश्रतुः शश्रुः। श्राता। श्रास्यति। श्रातु। अश्रात्। श्रायात्। श्रायात् श्रेयात्। अश्रासीत् अश्रासिषुः। अश्रास्यत्।

९ द्रा = बुरा चलन, निन्दा।

द्राति। दद्रौ। द्राता। द्रास्यति। द्रातु। अद्रात्। द्रायात्। द्रायात्, द्रेयात्। अद्रासीत् अद्रास्यत्।

१० प्सा = खाना।

प्साति। पप्सौ। प्साता। प्सास्यति। प्सातु। अप्सात्। प्सायात्, प्सेयात्। अप्सासीत्। अप्सास्यत्।

११ रा = देना।

राति। ररौ। राता। रास्यति। रातु। अरात्। रायात्। रायात्। अरासीत्। अरास्यत्।

१२ ला = लेना।

लाति। ललौ। लाता। लास्यति। लातु। अलात्। लायात् लायात्। अलासीत्। अलास्यत्।

१३ दाप् = काटना

दाति। ददौ। दाता। दास्यति। अदात्। दायात् दायात्। अदासीत्। अदास्यत्। पर्व', पा"

१४ ख्या = कहना, बोलना

ख्याति। ख्यातु। अख्यात्। ख्यायात्। इस धातु का सार्वधातुक में ही प्रयोग होता है।

१५ विद् = जानना।

वेत्ति वित्तः विदन्ति, वेत्सि वित्थः वित्थ वेद्मि विद्वः विद्मः। वेद विदतुः विदुः वेत्थ विदथुः विद वेद विद्व विद्म। लिट्- विदाञ्चकार विदाञ्चक्रतुः विदाञ्चक्रुः विदाञ्चकर्थ विदाञ्चक्रथुः विदाञ्चक्र विदाञ्चकार, विदाञ्चकर विदाञ्चकृव विदाञ्चकृम। विवेद विविदतुः। विविदुः। वेदिता। वेदिष्यति। वेत्तु। अवेत्। अवित्ताम् अविदुः। विद्यात् विद्याताम् विद्युः। विद्यात् विद्यास्ताम् विद्यासुः। अवेदीत्। अवेदिष्यत्।

प्रयानम् = जाना। गोपनम् = छिपाना। रक्षा = निधनम् मृत्यु, नाश।। लाञ्छनम् = कलङ्क, चिन्ह। आयतनम् = स्थान

(अभ्यास १८)

संस्कृत बनाओ।

फल और फूलों की विशेष वृद्धि हुई। दशरथ ने वेदों को पढ़ा था और देवों का सत्कार किया था। विद्वानों की सभा में मूर्ख लोग नहीं जाते। कौन सोते हैं कोतवाल पूछते हैं। इस समय हम न्यायशास्त्र को पढ़ते हैं। वे चुगलखोर की बातें नहीं सुनते। हे स्वामिन्! यह दिल्लगीबाज़ नहीं लावेगा। ये लड़के आज क्या पढ़ेंगे। हमने वेद। को पढ़ लिया।

अथोभयपदप्रकरणम्।

२० दुह दुहना।

लट्-दोग्धि दुग्धः दुहन्ति, धोक्षि दुग्धः दुग्ध, दोह्मि दुह्वः दुह्मः। दुग्धे दुहाते दुहते धुक्षे दुहाथे धुग्ध्वे दुहे दुह्वहे दुह्महे। लिट् —दुदोह दुदुहतुः दुदुहुः दुदोहिथ दुदुहथुः दुदुह दुदोह दुदुहिव दुदुहिम। दुदुहे दुदुहाते दुदुहिरे दुदुहिषे दुदुहाथे दुदुहिध्वे दुदुहिढ्वे दुदुहे दुदुहिवहे दुदुहिमहे। लुट् —दोग्धा दोग्धारौ दोग्धारः दोग्धासि। दोग्धासे। धोक्ष्यति धोक्ष्यते। लोट् दोग्धु दुग्धात् दुग्धाम् दुहन्तु दुग्धि दुग्धात् दुग्धम्-दुग्ध दोहानि दोहाव दोहाम। दुग्धाम् दुहाताम् दुहताम् धुक्ष्व दुहाथाम् धुग्ध्वम् दुहै दोहावहै दोहामहै। लङ् अधोग्-क् अदुग्धाम् अदुहन् अधोग्-क् अदुग्धम् अदुग्ध अदोहम् अदुह्व अदुह्म। अदुग्ध अदुहाताम् अदुहत अदुग्धाः अदुहाताम् अधुग्ध्वम् अदुहि अदुह्वहि अदुह्महि। वि० लि०-दुह्यात् दुह्याताम् दुह्युः। दुहीत दुहीयाताम् दुहीरन्। आ० लिङ् दुह्यात् दुह्यास्ताम् दुह्यासुः। धुक्षीष्ट धुक्षीयास्ताम् धुक्षीरन्। लुङ् अधुक्षत् अधुक्षताम् अधुक्षन्। अधुक्षत अदुग्ध, अधुक्षाताम् अधुक्षन्त अधुक्षथाः

ढाम् अलिहन् अलेट् अलीढम् अलीढ अलेहम् अलिह्व अलि-
अलीढ अलिहाताम् अलिहत अलीढाः अलिहाथाम् अलीढ्व
अलिहि अलिह्वहि अलिह्महि । वि० लिङ्—लिह्यात् । लिही
लिहीयाताम् लिहीरन् । आ० लिङ् लिह्यात् लिह्यास्ताम् लिह्यासुः
लिक्षीष्ट लिक्षीयास्ताम् लिक्षीरन् । लुङ् अलिक्षत् अलिक्षताम्
अलिक्षन् । अलिक्षत, अलीढ अलिक्षाताम् अलिक्षन्त अलि-
क्षथाः अलीढाः अलिक्षाथाम् अलिक्षध्वम्, अलीढ्वम् अलिक्षि
अलिक्षावहि अलिक्षामहि । लृङ् अलेक्ष्यत् । अलेक्ष्यत ॥

२३ ब्रूञ् = स्पष्ट बोलना ।

लट्—आह आहतुः आहुः आत्थ आहथुः । ब्रवीति ब्रूतः
ब्रुवन्ति ब्रवीषि ब्रूथः ब्रूथ ब्रवीमि ब्रूवः ब्रूमः । ब्रूते ब्रुवाते ब्रुवते
ब्रूषे ब्रुवाथे ब्रूध्वे ब्रुवे ब्रूवहे ब्रूमहे । लिट्—उवाच ऊचतुः ऊचुः
उवचिथ उवक्थ ऊचथुः ऊच उवाच, उवच ऊचिव ऊचिम ।
ऊचे ऊचाते ऊचिरे ऊचिषे ऊचाथे ऊचिध्वे ऊचे ऊचिवहे
ऊचिमहे । वक्ता वक्तासे । वक्ष्यति । वक्ष्यते । ब्रवीतु ब्रूहि
ब्रवाणि ब्रूताम् ब्रुवाताम् ब्रुवताम् ब्रूष्व ब्रुवाथाम् ब्रूध्वम् ब्रवै
ब्रवावहै ब्रवामहै । अब्रवीत् अब्रूताम् अब्रुवन् । अब्रवीः अब्रूतम्
अब्रूत अब्रवम् अब्रूव अब्रूम । अब्रूत अब्रुवाताम् अब्रुवत अब्रूथाः
अब्रुवाथाम् अब्रूध्वम् अब्रुवि अब्रूवहि अब्रूमहि । ब्रूयात् ब्रूया-
ताम् ब्रूयुः । ब्रुवीत ब्रुवीयाताम् ब्रुवीरन् । उच्यात् उच्यास्ताम्
उच्यासुः वक्षीष्ट वक्षीयास्ताम् वक्षीरन् । अवोचत् अवोचताम्
अवोचन् । अवोचत अवोचेताम् अवोचन्त । अवक्ष्यत् अवक्ष्यत ।

२४ ऊर्णुञ् = आच्छादन, ढांकना ।

लट्—ऊर्णोति, ऊर्णौति ऊर्णुतः ऊर्णुवन्ति ऊर्णोषि ऊर्णौषि
ऊर्णुथः ऊर्णुथ, ऊर्णोमि ऊर्णौमि ऊर्णुवः [illegible] ऊर्णुते

ऊर्णुवाते ऊर्णुवते ऊर्णुषे ऊर्णुवाथे ऊर्णुध्वे ऊर्णुवे ऊर्णु
ऊर्णुमहे ।.लिट्-ऊर्णुनाव ऊर्णुनुवतुः ऊर्णुनुवुः ऊर्णुनुवि
ऊर्णुनविथ ऊर्णुनुवथुः ऊर्णुनुव, ऊर्णुनाव, ऊर्णुनव ऊर्णुनुवि
ऊर्णुनुविम । ऊर्णुनुवे ऊर्णुनुवाते, ऊर्णुनुविरे ऊर्णुनु
ऊर्णुनुवाथे ऊर्णुनुविध्वे ऊर्णुनुवे ऊर्णुनुविवहे ऊर्णुनुविम
ऊर्णविता ऊर्णुविता । ऊर्णवितासे, ऊर्णुवितासे । ऊर्णुविष्य
ऊर्णविष्यति ऊर्णुविष्यते ऊर्णविष्यते । ऊर्णोतु, ऊर्णौतु ऊर्णु
ऊर्णवानि ऊर्णवाव ऊर्णवाम । ऊर्णुताम ऊर्णुवाताम ऊर्णु
ताम ऊर्णुष्व ऊर्णुवाथाम् ऊर्णुध्वम् । ऊर्णवै ऊर्णवा
ऊर्णवामहै । लङ्-और्णोत् और्णुताम और्णुवन् । और्णोन और्
वाताम और्णुवत । वि० लिङ्-ऊर्णुयात ऊर्णुयाताम् ऊर्णु
ऊर्णुवीव ऊर्णुवीयाताम ऊर्णुवीरन् । आ० लिङ्—ऊर्णुय
ऊर्णुयास्ताम ऊर्णुयासुः । ऊर्णुविषीष्ट ऊर्णुविषीयास्
ऊर्णुविषीरन् ऊर्णविषीष्ट ऊर्णविषीयास्ताम् ऊर्णविषीरन्
लुङ्-और्णावीत् और्णाविष्टाम् और्णाविषुः और्णवीत और्ण
ष्टाम और्णुविषुः । और्णुवीत और्णुविष्टाम और्णुविषुः । औ
विष्ट और्णविषाताम् और्णविषत, और्णुविष्ट और्णुविषा
और्णविषत । लृङ्-और्णुविष्यत । और्णविष्यत । और्णवि
और्णुविष्यत ।

लवङ्गम्=लौंग । पल्वलम्=तलैया पललम्=
सलिलम्=पानी । ललाटम्=माथा । वर्तिः=बत्ती । ब
=बटेर । निदाघः=गर्मी का समय । निःसंज्ञः=बेहोश । र
मूर । वदनम्=मुख । सदनम्=स्थान । सौरभ्यम्=
न्धि । बालचरः=स्काउट । पर्जन्य=मेघ । शिविरम्=छाव
[illegible]=मचान, गुल्म । व्यजनम्=पंखा । प्रक्षालनम्=ध
सविधम्=समीप । तूलम्=रुई । घोषितम्=ढंढोरा पिट

तृष्णा = लोभ । धिषणा = बुद्धि । धनादेश: = मनीआर्डर । कमण्डलु: = लोटा । इत्थङ्कारम् इस तरह । उद्यानम् = बाग ।

(अभ्यास १६)

भाषा बनाओ ।

दुहन्ति धेनू:पुरुषा मदीया: । वेग्धि क्षीरेण पौरुषम् । लिहन्ति धेनवो वत्सान् । रसं लीढि रुषं जहि । स्वस्तये वायुमुपब्रवामहे । ब्रवीमि सत्यं सदने पठाम ॥ लवङ्गतैलस्य भविष्यति किम् ? ऊर्णोतु वस्त्रेण मुखं स्वकीयम् । प्रत्यवस्नानाय व्रजन्ति ब्राह्मणा: । पीड़ा ललाटे कथमस्तितेघटी । वर्तिनो दीपके तैल अपेऽइंत्वमधीयाथा: । अन्धकवर्त्तकीयेन कार्यं न्ययेन सिध्यति । तृष्णे देवि ! नमस्तुभ्यम् । उपद्रवो नहि कर्त्तव्य: ।

(अभ्यास २०)

संस्कृत बनाओ ।

हमारे आदमी गौओं को दुहते हैं । दूध से पुरुषार्थ बढ़ता है । गायें बछड़ों को चाटती हैं । तू रस का स्वाद और क्रोध को छोड़ । कल्याणार्थ वायु का हम सम्यक् व्याख्यान करें । मैं सच कहता हूँ कि घर पढ़ता हूँ । लौंग के तेल का क्या होगा । आप कपड़े से अपने मुख को ढांक लें । भोजन के लिये ब्राह्मण जाते हैं । ब्रह्मचारिन ! मेरे माथे में पीड़ा क्यों है ? मेरे दीपक में न बत्ती है और न तेल अतएव मैं सोता हूँ और तू पढ़ । अन्धे की बटेर इस न्याय से कार्य सिद्ध होता है ।

अथ जुहोत्यादिगणप्रकरणम् ।

१ हु = देना, लेना, होमकरना ।

लट् –जुहोति जुहुत: जुह्वति जुहोषि जुहुथ: जुहुथ जुहोमि

जुहुथ: जुहुम' लिट-जुहवाञ्चकार जुहवाञ्चक्रतु: जुहवाञ्चक्रु: जुहवाम्बभूव । जुहवामास । जुहाव जुहुवतु: जुहुवु: जुहोथ जुहविथ जुहुवथु: जुहुव जुहाव, जुहव जुहुविव जुहुविम । होता । होष्यति । लोट् जुहोतु, जुहुतात् जुहुताम् जुह्वतु जुहुधि जुहुतात् जुहुतम् जुहुत जुहवानि जुहवाव जुहवाम । अजुहोत् अजुहुताम् अजुहवु: अजुहो: अजुहुतम् अजुहुत अजुहवम् अजुहुव अजुहुम । विधिलिङ्-जुहुयात् जुहुयाताम् जुहुयु: जुहुया: जुहुयातम् जुहुयात जुहुयाम् जुहुयाव जुहुयाम । आ० लिङ्-हूयात् हूयास्ताम् हूयासु: । लुङ्-अहौषीत् अहौष्टाम् अहौषु: अहौषी: अहौष्टम् अहौष्ट अहौषम् अहौष्व अहौष्म । लृङ्-अहोष्यत् ।

२ ञि-भी = भयकरना डरना ।

लट्=बिभेति बिभितः बिभीतः बिभ्यति, बिभेषि बिभिथः बिभीथः बिभिथ, बिभीथ, बिभेमि बिभिवः, बिभीवः बिभिम बिभीमः । लिट-बिभयाञ्चकार । बिभयाञ्चभूव । बिभयामास । बिभाय बिभ्यतुः बिभ्युः, बिभेथ, बिभयिथ बिभ्यथुः बिभ्य बिभाय बिभय बिभ्यिव बिभ्यिम । लुट्-भेता । लृट्—भेष्यति । लोट् बिभेतु बिभितात्, बिभीतात् बिभिताम्, बिभीताम् बिभ्यतु बिभिहि, बिभीहि बिभितात् बिभीतात् बिभितम्, बिभीतम् बिभित बिभीत, बिभयानि बिभयाव बिभयाम । लङ् अबिभेत् अबिभिताम्, अबिभीताम् अबिभयुः, अबिभेः, अबिभितम्, अबिभीतम्, अबिभित, अबिभीत अबिभयम् अबिभिव, अबिभिव, अबिभिम, अबिभीम । वि० लिङ् बिभियात्, बिभीयात् बिभियाताम् बिभीयाताम् बिभियुः बिभीयुः बिभियाः बिभीयाः बिभियातम् बिभीयातम् बिभियात, बिभीयात बिभियाम् बिभीयाम् बिभियाव बिभीयाव बिभियाम बिभीयाम । आ० लिङ् भीयात् भीयास्ताम् भीयासु । लुङ्-अभैषीत् अभैष्टाम् अभैषुः । अभेष्यत्

३ ह्री = लज्जा, शर्म ।

लट्—जिह्रेति जिह्रीतः जिह्रियति, जिह्रेषि जिह्रीथः जिह्रीथ जिह्रेमि जिह्रीवः जिह्रीमः। लिट्—जिह्रयाञ्चकार । जिह्रयाम्बभूव । जिह्रयामास । जिह्राय जिह्रियतुः जिह्रियुः जिह्रेथ, जिह्रयिथ जिह्रियथुः जिह्रिय जिह्राय, जिह्रय जिह्रियिव जिह्रियिम । [लुट्—ह्रे]ता । ह्रेष्यति । जिह्रेतु जिह्रितात् जिह्रीताम् जिह्रियतु जिह्रीहि, जिह्रीतात् जिह्रीतम् जिह्रीत जिह्रयाणि जिह्रयाव जिह्रयाम। लङ्—अजिह्रेत् अजिह्रीताम् अजिह्रयुः अजिह्रेः अजिह्रीतम् अजिह्रीत अजिह्रयम् अजिह्रीव अजिह्रीम। वि० लिङ्—जिह्रीयात् जिह्रीयाताम् जिह्रीयुः । आ० लिङ्—ह्रीयात् ह्रीयास्ताम् ह्रीयासुः। [अ]ह्रैषीत् अह्रैष्टाम् अह्रैषुः । अह्रेष्यत ।

४ पॄ = पालना, पूरा करना, भरना ।

लट्—पिपर्ति पिपूर्तः पिपुरति पिपर्षि पिपूर्थः पिपूर्थ पिपर्मि पिपूर्वः पिपूर्मः । लिट्—पपार पप्रतुः पपरतुः पप्रुः, पपरुः पपर्थ पप्रथुः पपरथुः पप्र पपार, पपर पप्रिव पपरिव पप्रिम पपरिम । लुट्—परिता परीता । लृट्—परिष्यति, परीष्यति । लोट् पिपर्तु पिपूर्तात् पिपूर्ताम् पिपुरतु पिपूर्हि, पिपूर्तात् पिपूर्तम् पिपूर्त पिपराणि पिपराव पिपराम । लङ्—अपिपः अपिपूर्ताम् अपिपरुः । अपिपः अपिपूर्तम् अपिपूर्त । अपिपरम् अपिपूर्व अपिपूर्म। वि० लिङ्—पिपूर्यात् पिपूर्याताम् । पिपूर्युः पिपूर्याः पिपूर्यातम् पिपूर्यात पिपूर्याम् पिपूर्याव पिपूर्याम । आ० लिङ्—पूर्यात् पूर्यास्ताम् पूर्यासुः पूर्याः पूर्यास्तम् पूर्यास्त पूर्यासम् पूर्यास्व पूर्यास्म । लुङ्—अपारीत् अपारिष्टाम् अपारिषुः लृङ्—अपरिष्यत्, अपरीष्यत् ।

५ ओहाक् 'हा' = त्याग, छोड़ना ।

लट्-जहाति जहितः जहति । जहासि जहिथः जहीथः

लुङ्-अघात् अघाताम् अघुः । अघिन अघिषाताम् अघिष
अघास्यत्, अघास्यत ।

११ णिजिर् = शुद्धि, पालन ।

लट्—नेनेक्ति । नेनिक्तः नेनिजति नेनेक्षि नेनिक्थः
नेनेज्मि नेनिज्वः नेनिज्मः । नेनिक्ते नेनिजाते नेनिजते नेनि
नेनिजाथे नेनिग्ध्वे नेनिजे नेनिज्वहे नेनिज्महे । लिट्—नि
निनिजतुः निनिजुः निनेजिथ, निनेक्थ निनिजथुः निनिज नि
निनिजिव निनिजिम । निनिजे निनिजाते निनिजिरे निनि
निनिजाथे निनिजिध्वे निनिजे निनिजिवहे निनिजिमहे । लुट्
नेक्ता नेक्तारौ नेक्तारः । नेक्तासि, नेक्तासे । नेक्ष्यति, नेक्ष्य
लोट्—नेनेक्तु नेनिक्तात् नेनिक्ताम् नेनिजतु नेनिग्धि नेनि
नेनिक्तम् नेनिक्त नेनिजानि नेनिजाव नेनिजाम । नेनिक्ताम् नै
जाताम् नेनिजाताम् नेनिक्ष्व नेनिजाथाम् नेनिग्ध्वम् नै
नेनिजावहै नेनिजामहै । लङ्—अनेनेग्-क् अनेनिक्ताम् अने
अनेनेग्-क् अनेनिक्तम् अनेनिक्त अनेनिजम् अनेनिज्व अने
अनेनिक्त अनेनिजाताम् अनेनिजत अनेनिक्थाः अनेनिजा
अनेनिग्ध्वम् अनेनिजि अनेनिज्वहि अनेनिज्महि । वि० लि
नेनिज्यात् नेनिज्याताम् नेनिज्युः । नेनिजीत नेनिजीया
नेनिजीरन् आ० लिङ्—निज्यात् निज्यास्ताम्, निज
निक्षीष्ट निक्षीयास्ताम् निक्षीरन् । लुङ्—अनैक्षीत् अने
अनैक्षुः । अनिजत् अनिजताम् अनिजन् । अनिक्त अनिक्षा
अनिक्षत अनिक्थाः अनिक्षाथाम् अनिग्ध्वम् अनिक्षि अनि
अनिक्ष्महि अनेक्ष्यत्, अनेक्ष्यत ।

रथिकः = रथी, रथवान । अश्वारोहः = सवार । पदाधा
। गोमयम् = गोबर । आसिकः = तलवार वा

याष्टीकः = लाठीवाला । शाक्तीकः = भालेवाला । धानुष्कः = धनुर्धारी । मण्डलाधिपः = कलेक्टर । मण्डलसन्धाता = कमिश्नर । प्रेक्षामन्दिरम् = थियेटर । बाहुयुद्धम् = कुश्ती । प्राभृतम् = भेंट, रिश्वत । स्निग्धता = चिकनाई । रूक्षता = रूखापन । मित्रता = दोस्ती । शत्रुता = दुश्मनी । धारागृहम् = फव्वारा ।

(अभ्यास २३)

भाषा बनाओ ।

तन्मे वरद्वयमुररीकृतपूर्वमेव याचे विभर्तु भरतस्तवराजपदनीम् । वर्षाणि तिष्ठतु चतुर्दशदण्डकायाम्, सौमित्रिमैथिलसुतासहितश्च रामः । दाता न दापयति दापयिता न दत्ते । मेधां मे वरुणो ददातु । विद्यार्थिनो विदधते यतिनां प्रणामान् । न सर्वाणि वस्त्राणि नेनेक्ति भृत्यः । अश्वारोहा न धावन्ति याष्टीका घ्नन्ति दारकान् । युध्यन्ते बाहुयुद्धं ते । विज्ञातदोषेषु दधाति दण्डम् । प्रातः कृत्यं न कुर्वन्ति कीदृशा ब्रह्मचारिणः ।

(अभ्यास २४)

संस्कृत बनाओ ।

कैकेयी बोली—जो मेरे लिये दो वरदान पूर्व ही स्वीकृत किये हैं उनको मैं माँगती हूँ—भरत तुम्हारी राजगद्दी को भोगें और लक्ष्मण तथा सीता सहित रामचन्द्र चौदह वर्ष तक वन में रहें । दाता दिलवाता नहीं और दिलवाने वाला देता नहीं है परमात्मन् ! मेरे लिये पवित्र बुद्धि दीजिये । संन्यासियों को विद्यार्थी प्रणाम करते हैं । सब कपड़ों को नौकर साफ नहीं करता । सवार नहीं दौड़ते । लठैत लड़कों को मारते हैं । वे कुश्ती लड़ते हैं । दोषों के जानने पर दण्ड देता है ।

अथ दिवादिगण-प्रकरणम् ।

१ दिवु = क्रीडा, जीतने की इच्छा, खेलना, व्यवहार, चमक, स्तुति, हर्ष मद, स्वप्न, शोभा, गति ।

लट् -दीव्यति दीव्यतः दीव्यन्ति दीव्यसि दीव्यथः दी
दीव्यामि दीव्यावः दीव्यामः । लिट्—दिदेव दिदिवतुः दि
दिदेविथ दिदिवथुः दिदिव दिदेव दिदिविव दिदिविम । देवि
देविष्यति । दीव्यतु दीव्यतात् दीव्यताम् दीव्यन्तु दी
दीव्यतात् दीव्यतम् दीव्यत दीव्यानि दीव्याव दीव्या
अदीव्यत् अदीव्यताम् अदीव्यन् । दीव्येत् दीव्येताम् दीव्ये
दीव्यात् दीव्यास्ताम् दीव्यासुः । अदेवीत् अदेविषाम् अदेवि
अदेविष्यत् ।

२ षिवु = सीना ।

सीव्यति । सिषेव सिषिवतुः सिषिवुः सिषेविथ सिषिव
सिषिविव सिषेव सिषिविव सिषिविम । सेविता । सेविष्यति
सीव्यतु । असीव्यत् । सीव्येत् । सीव्यात् । असेवीत् असेवि
षाम् असेविषुः । असेविष्यत् ।

३ नृती = नाचना, उछलना ।

नृत्यति । ननर्त ननृततुः ननृतुः ननर्तिथ ननृतथुः ननृ
ननर्त ननृतिव ननृतिम । नर्तिता । नर्तिष्यति, नर्त्स्यति । नृत्यतु ।
अनृत्यत् । नृत्येत् । नृत्यात् । अनर्तीत् अनर्तिषाम् अनर्तिषुः ।
अनर्तिष्यत् अनर्त्स्यत् ।

४ त्रसी = घबराहट, डरना ।

त्रस्यति त्रस्यतः त्रस्यन्ति, त्रसति त्रसतः त्रसन्ति । तत्रास

रास्ते में नष्ट करते हैं। बाप में नाली को कौन आदमी तोड़न
है। बालक वचन मेरे चित्त को दुःख देते हैं। जल से तृत्त पु
होता है और पाले से सूख जाता है। 'धर्म से' पूर्व किये हु
पाप नष्ट हो जाते हैं। जीव अकेला पैदा होता है और अकेल
ही मरता है। अहह! अतिशय मन पीड़ित होता है। अ
बालको! देखो कपट से इकट्ठा किया हुआ धन शीघ्र ही न
हो जाता है।

१६ डीङ् = आकाशगति, उड़ना।

डीयते, उड्डीयते। डिड्ये डिड्याते डिड्यिरे। डयिता
डयिष्यते। डीयताम्। अडीयत। डीयेत। डयिषीष्ट। अडयिष्ट
अडयिष्यत। प्रायः यह धातु उत् पूर्वक ही प्रयुक्त होता है।

१७ पीङ् = पीना, पान।

पीयते। पिप्ये पिप्याते पिप्यिरे। पेता। पेष्यते। पीयताम्
अपीयत। पीयेत। पेषीष्ट। अपेष्ट अपेषाताम् अपेषत। अपेष्य

१८ माङ् = मान नापना।

मायते। ममे ममाते ममिरे। माता। मास्यते। मायताम्
अमायत। मायेत। मासीष्ट। अमास्त अमासाताम् अमास
अमास्यत।

१९ जनी = जनन, प्रकट होना, पैदायश

जायते। जज्ञे जज्ञाते जज्ञिरे। जनिता। जनिष्यते। ज
ताम्। अजायत। जायेत। जनिषीष्ट। अजनि, अजनिष्ट।
निषाताम् अजनिषत। अजनिष्यत।

२० दीपि = दीप्ति, चमक, प्रकाश।

दीप्यते। दिदीपे दिदीपाते। दिदीपिरे। दीपिता। दीपिष्य
दीप्यताम्। अदीप्यत। दीप्येत। दीपिषीष्ट। अदीपि, अदी

अद्योपिषातम् अद्योपिषत। अद्योगिष्यत।

२१ पद = ज्ञान गमन, प्रापण।

पद्यते। पेदे पेदाते पेदिरे। पत्ता। पत्स्यते। पद्यताम्। अपद्यत। पद्येत। पत्सीष्ट पत्सीयास्ताम् पत्सीरन्। अपादि अपत्साताम् अपत्सत। अपत्स्यत।

२२ विद = सत्ता, उपस्थिति, होना।

विद्यते। विविदे विविदाते विविदिरे। वेत्ता। वेत्स्यते। विद्यताम्। अविद्यत। विद्येत। वित्सीष्ट। अवित्त अवित्साताम् अवित्सत अवेत्स्यत।

२३ बुध = जानना, समझना।

बुध्यते। बुबुधे बुबुधाते बुबुधिरे। बोद्धा। भोत्स्यते। बुध्यताम्। अबुध्यत। बुध्येत। भुत्सीष्ट भुत्सीयास्ताम् भुत्सीरन्। अबोधि, अबुद्ध अभुत्साताम् अभुत्सत। अबुद्धाः अभुत्साथाम् अभुद्ध्वम्। अभुत्सि अभुत्स्वहि अभुत्स्महि। अभोत्स्यत।

२४ युध = प्रहार, लड़ना।

युध्यते। युयुधे युयुधाते युयुधिरे। योद्धा। योत्स्यते। युध्यताम्। अयुध्यत। युध्येत। युत्सीष्ट। अयुद्ध अयुत्साताम् अयुत्सत। अयोत्स्यत।

२५ सृज = त्याग, छोड़ना, बनाना।

सृज्यते। ससृजे ससृजाते ससृजिरे। स्रष्टा। स्रक्ष्यते। सृज्यताम्। असृज्यत। सृज्येत। सृक्षीष्ट। असृष्ट असृक्षाताम् असृक्षत। अस्रक्ष्यत।

अथोभयपदिनः।

२६ मृष = तितिक्षा, सहन करना।

सन्ति फलानि पश्य । यमुनायास्तीरे निवसन्ति साधवः । श्रुता कथा मया त्वया मृषा निगद्यते ।

(अभ्यास २८)

संस्कृत बनाओ ।

पक्षी यहाँ उड़ते हैं और साफ़ पानी पीते हैं । नाचने वाला लड़का नाचता है । जीव न कभी मरता है और न पैदा होता है । यहाँ दीपक जलते हैं अन्धकार का लेश नहीं । यह पैदल गाँव को जाता है सफ़र खर्च नहीं लिये जाता । पण्डित शास्त्र को जानते हैं और क्षत्रिय संग्राम में लड़ते हैं । परमात्मा सब जगत् को बार बार बनाता है । वैरियों का नाम मात्र भी अनुचित व्यवहार नहीं सहता । यह उसके फलों को कपड़े में बाँधता है । यमुना के तट पर साधु रहते हैं । मैंने कथा कब सुनी है तुम झूठ कहते हो ।

अथ स्वादिगणप्रकरणम् ।

उभयपदिनोधातवः ।

१ षुञ् = रस निकालना ।

सुनोति सुनुतः सुन्वन्ति सुनोषि सुनुथः सुनुथ सुनोमि सुनुवः सुन्वः सुनुमः सुन्मः । सुनुते सुन्वाते सुन्वते सुनुषे सुन्वाथे सुनुध्वे सुन्वे सुनुवहे सुन्वहे, सुनुमहे सुन्महे । लिट्—सुषाव सुषुवतुः सुषुवुः सुषविथ सुषोथ सुषुवथुः सुषुव सुषाव सुषव सुषुविव सुषुविम । सुषुवे सुषुवाते सुषुविरे सुषुविषे सुषुवाथे सुषुविढ्वे सुषुवे सुषुविवहे सुषुविमहे । लुट्—सोता सोतारौ सोतारः सोतासि सोतास्मि सोतास्मः सोष्यति सोष्यते सुनोतु सुनुतात् सुनुताम् सुन्वन्तु सुनु सुनुतम् सुनुत सुनवानि सुनवाव सुनवाम सुनुताम् सुन्वाताम् सुन्वताम् सुनुष्व सुन्वाथाम् सुनुध्वम् सुनवै सुनवावहै सुनवामहै लङ्—

असुनोत् असुनुताम् असुन्वन् असुनोः असुनुतम् असुनुत असु-
नवम् असुनुव, असुन्व असुनुम असुन्म । असुनुत असुन्वा-
ताम् असुन्वत असुनुथाः असुन्वाथाम् असुनुध्वम् असुन्वि असु-
नुवहि, असुन्वहि असुनुमहि, असुन्महि । विधिलिङ् – सुनुयात्
सुनुयाताम् सुनुयुः सुनुयाः सुनुयातम् सुनुयात सुनुयाम् सुनु-
याव सुनुयाम । सुन्वीत सुन्वीयाताम् सुन्वीरन्, सुन्वीथाः
सुन्वीयाथाम् सुन्वीध्वम् सुन्वीय सुन्वीवहि सुन्वीमहि । आशी-
र्लिङ् —सूयात् सूयास्ताम् सूयासुः सूयाः सूयास्तम् सूयास्त
सूयासम् सूयास्व सूयास्म । सोषीष्ट सोषीयास्ताम् सोषीरन्
सोषीष्ठाः सोषीयास्थाम् सोषीढ्वम् सोषीय सोषीवहि सोषी-
महि । लुङ् असावीत् असाविष्टाम् असाविषुः । असोष्ट असो-
षाताम् असोषत । असोष्यत्, असोष्यत

२ चिञ् = चयन, चुनना ।

चिनोति चिनुतः चिन्वन्ति । चिनुते चिन्वाते चिन्वते
चिचाय चिच्यतुः चिच्युः चिचयिथ, चिचेथ चिच्यथुः चिच्य
चिचाय, चिचय चिच्यिव चिच्यिम । एवं चिकाय चिक्यतुः
चिक्युः-इत्यादि । चिच्ये चिच्याते चिच्यिरे चिच्यिषे चिच्याथे
चिच्यिध्वे चिच्ये चिच्यिवहे चिच्यिमहे । एवं चिक्ये चिक्याते
चिक्यिरे इत्यादि । चेता चेतारौ चेतारः चेतासि । चेतासे
चेष्यति । चेष्यते । चिनोतु चिनुतात् चिनुताम् चिन्वन्तु
चिनुताम् चिन्वाताम् चिन्वताम् । अचिनोत् अचिनुताम् अचि-
न्वन् । अचिनुत अचिन्वाताम् अचिन्वत । चिनुयात् चिनुया-
ताम् चिनुयुः । चिन्वीत चिन्वीयाताम् चिन्वीरन् । चीयात्
चीयास्ताम् चीयासुः । चेषीष्ट चेषीयास्ताम् चेषीरन् । अचैषीत्
अचैष्टाम् अचैषुः । अचेष्ट अचेषाताम् अचेषत । अचेष्यत्
अचेष्यत ।

३ स्तृञ् = आच्छादन, ढाँकना।

स्तृणोति स्तृणुतः स्तृण्वन्ति। स्तृणुते स्तृण्वाते स्तृण्वते। तस्तार तस्तरतुः तस्तरुः तस्तर्थ तस्तरथुः तस्तर तस्तार तस्तर तस्तरिव तस्तरिम। तस्तरे तस्तराते तस्तरिरे तस्तरिषे तस्तराथे तस्तरिध्वे तस्तरे तस्तरिवहे तस्तरिमहे। स्तर्ता स्तर्तारौ स्तर्तारः स्तर्तासि, स्तर्तासे। स्तरिष्यति। स्तरिष्यते। स्तृणोतु स्तृणुतात् स्तृणुताम् स्तृण्वन्तु। स्तृणुताम् स्तृण्वाताम् स्तृण्वताम्। अस्तृणोत् अस्तृणुताम् अस्तृण्वन्। अस्तृणुत अस्तृण्वाताम् अस्तृण्वत। स्तृणुयात् स्तृणुयाताम् स्तृणुयुः। स्तृण्वीत स्तृण्वीयाताम् स्तृण्वीरन्। स्तर्यात् स्तर्यास्ताम् स्तर्यासुः। स्तरिषीष्ट स्तरिषीयास्ताम्। स्तरिषीरन्। स्तृषीष्ट स्तृषीयास्ताम् स्तृषीरन्। अस्तार्षीत् अस्तार्ष्टाम् अस्तार्षुः। अस्तरिष्ट अस्तरिषाताम् अस्तरिषत। अस्तृत अस्तृषाताम् अस्तृषत। अस्तरिष्यत्, अस्तरिष्यत।

४ धूञ् = कांपना, कँपाना।

धूनोति धूनुतः धून्वन्ति। धूनुते धून्वाते धून्वते। दुधाव दुधुवतुः दुधुवुः दुधविथ दुधोथ। दुधुवे दुधुवाते दुधुविरे। धोता, धविता। धोतासि धोतासे। धोष्यति, धविष्यति धोष्यते धविष्यते। धूनोतु धूनुतात् धूनुताम् धून्वन्तु। धूनुताम् धून्वाताम् धून्वताम्। अधूनोत् अधूनुताम् अधून्वन्, अधूनुत अधून्वाताम् अधून्वत। धूनुयात् धूनुयाताम् धूनुयुः। धून्वीत धून्वीयाताम् धून्वीरन्। धूयात् धूयास्ताम् धूयासुः। [illegible]

[illegible]

उत्पतनम् = उड़ना, ऊपर को जाना। निपतनम् = गिरना। मोचनम् = छोड़ना। पेषणम् = पीसना। प्रतिलाणम् = इकट्ठा। उत्पादनम् = पैदा करना। तर्पणम् = तृप्त करना, तृप्ति। खननम् = खोदना। धरणम् = धरना। जननम् = पैदायश। मरणम् = मौत। दर्शनम् = देखना। स्पर्शनम् = छूना। मननम् = मानना।

(अभ्यास २९)

भाषा बनाओ।

सुनोमि सोमं न चिनोमि पुष्पम्। स्तृणोतु पात्राणि भवा-निमानि। धूनोति चम्पकवनानि समीरणोऽयम्। निपतनं शिखरात् सरलं भवेत्। नहि तथोत्पतनं भवतीति किम्। प्रतिक्षणं धर्मपथं व्रजामि। मोदते जननं श्रुत्वा मरणं च विषीदति।

(अभ्यास ३०)

संस्कृत बनाओ।

सोम के रस को निकालता हूँ फूलों को इकट्ठा नहीं करता। आप इन बर्तनों को ढाँक दें। यह वायु चमेली के बनों को कंपाता है। हे मित्र! पर्वत से गिरना सहज है परन्तु उस पर चढ़ना कठिन है। सदा धर्म के मार्ग पर चलता हूँ। यह जन्म को सुनके प्रसन्न होता है और मृत्युको सुनके दुःखित होता है।

अथ तुदादिगणप्रकरणम्।

१ तुद = पीड़ा, दुःख, चुभना।

लट्—तुदति तुदतः तुदन्ति तुदसि तुदथः तुदथ तुदामि तुदावः तुदामः। तुदते तुदेते तुदन्ते तुदसे तुदेथे तुदध्वे तुदे तुदावहे तुदामहे। लिट्—तुतोद तुतुदतुः तुतुदुः तुतोदिथ तुतुदथुः तुतुद तुतोद तुतुदिव तुतुदिम। तुतुदे तुतुदाते तुतुदिरे तुतुदिषे तुतुदाथे तुतुदिध्वे तुतुदे तुतुदिवहे तुतुदिमहे। लृट्—तोत्स्यति तोत्स्यते। तुदतु तुदताम् तुदन्तु तुद तुदतम् तुदत तुदानि तुदाव तुदाम। तुदताम्

तुदेताम् तुदन्ताम् तुदस्व तुदेथाम् तुदध्वम् तुदै तुदावहै तुदा-
महै। लङ्-अतुदत् अतुदताम् अतुदन् अतुदः अतुदतम् अतु-
दत अतुदम् अतुदाव अतुदाम। अतुदत अतुदेताम् अतुदन्त
अतुदथाः अतुदेथाम् अतुदध्वम् अतुदे अतुदावहि अतुदामहि।
वि० लिङ्-तुदेत् तुदेताम् तुदेयुः तुदेः तुदेतम् तुदेत तुदेयम्
तुदेव तुदेम। तुदेत तुदेयाताम् तुदेरन् तुदेथाः तुदेयाथाम्
तुदेध्वम् तुदेय तुदेवहि तुदेमहि। आ० लिङ्—तुद्यात् तुद्या-
स्ताम् तुद्यासुः तुद्याः तुद्यास्तम् तुद्यास्त तुद्यासम् तुद्यास्व
तुद्यास्म। तुत्सीष्ट तुत्सीयास्ताम् तुत्सीरन् तुत्सीष्ठाः तुत्सीया-
स्थाम् तुत्सीध्वम् तुत्सीय तुत्सीवहि तुत्सीमहि। लुङ्-अतौ-
त्सीत् अतौत्ताम् अतौत्सुः अतौत्सीः अतौत्तम् अतौत्त अतौत्सम्
अतौत्स्व अतौत्स्म। अतुत्त अतुत्साताम् अतुत्सत अतुत्था-
अतुत्साथाम् अतुद्ध्वम् अतुत्सि अतुत्स्वहि अतुत्स्महि
लृङ्—अतोत्स्यत्, अतोत्स्यत।

२—णुद प्रेरणा करना, उकसाना।

नुदति नुदतः नुदन्ति। नुदते नुदेते नुदन्ते। नुनोद नुनुदतु-
र्नुनुदुः। नुनुदे नुनुदाते नुनुदिरे। नोत्ता। नोत्स्यति, नोत्स्यते
नुदतु, नुदताम्। अनुदत्, अनुदत। नुदेत् नुदेत। नुद्यात्
नुत्सीष्ट। अनौत्सीत्, अनुत्त। अनोत्स्यत्, अनोत्स्यत।

३ भ्रस्ज = पकाना, भूँजना।

भृज्जति भृज्जतः भृज्जन्ति। भृज्जते। भृज्जेते भृज्जन्ते
बभर्ज बभर्जतुः बभर्जुः बभर्जिथ, बभर्ष्ठ बभर्जथुः बभर्ज बभ-
र्जिव बभर्जिम। पक्षे बभ्रज्ज बभ्रज्जतुः बभ्रज्जुः। बभ्रज्जिथ
बभ्रष्ठ बभ्रज्जथुः बभ्रज्ज बभ्रज्ज बभ्रज्जिव बभ्रज्जिम। बभ-
र्जाते बभर्जिरे बभर्जिषे बभर्जाथे बभर्जिध्वे बभर्जे बभर्जिव-
बभर्जिमहे। पक्षे बभ्रज्जे बभ्रज्जाते बभ्रज्जिरे बभ्रज्जिषे बभ्र-

(अभ्यास ३१)

भाषा बनाओ।

शठा न मुञ्चन्ति हठं कदापि। भृज्जन्ति शाकानि कृषीवला इमे। मिलामि मित्रे न जहामि पौरुषम्। तुदन्ति चरणौ कुशाग्राणि मामि। कृषति हलवाहको हलम्। क्षेत्रं लुनन्ति लावकाः। मम: पुत्रान् विन्दावहै। सिञ्चताऽऽम्रस्य पादपम्। अक्षतं नहि लिम्पन्ति लेप्स्यन्ति यज्ञमन्दिरम्। मोक्ष्यामि गृहबन्धनम्। आखवो मम वस्त्राणि लुम्पन्ति त्वं न पश्यसि। नाहं पश्यामि।

(अभ्यास ३२)

संस्कृत बनाओ।

मूर्ख अपने हठ को कभी नहीं छोड़ते। ये किसान शाक पकाते हैं। मैं मित्र से मिलता हूँ पुरुषार्थ नहीं छोड़ता हूँ। क्या ये कुश तुम्हारे पैर में चुभते हैं? हल को चलाने वाला हल को जोतता है। काटने वाले खेत को काटते हैं। हम दोनों को अच्छे पुत्र मिलें। आम के वृक्ष को सींचो। वे चावल को नहीं लीपते यज्ञ मन्दिर को लीपेंगे। घर के बन्धन को छोड़ूँगा। तू नहीं देखता चूहे मेरे कपड़े काटते हैं। मैं नहीं देखता हूँ।

अथ परस्मैपदिनः।

११ कृति = छेदन, कृन्तन काटना, कतरना।

कृन्तति कृन्ततः कृन्तन्ति। चकर्त चकृततुः चकृतुः चकर्तिथ चकृतथुः चकृत चकर्त चकृतिव चकृतिम। कर्तिता। कर्तिष्यति कर्त्स्यति [illegible] कृन्त्यात् कृन्त्यास्ताम् कृत्या- [illegible] अकर्तीत् अकर्तिष्टाम् अकर्तिषुः [illegible] अकर्तिष्यत्, अकर्त्स्यत्।

१२ खिद = दुःख देना, कष्ट

[illegible] खेत्स्यति। खेत्ता [illegible] अखैत्सीत [illegible]

३४ भुजो = कौटिल्य, कुटिलता, खोटापन ।

भुजति । बुभोज । भोक्ता । भोदयति । भुजतु । अभुजत् । भुजेत् । भुज्यात् । अभौक्षीत् । अभोदयत् ।

३५ विश = प्रवेश, घुसना

विशति । विवेश । वेष्टा । वेदयति । विशतु । अविशत् । विशेत् । विश्यात् । अविक्षत् । अवेदयत् ।

३६ मृश = आमर्शन विचार ।

मृशति । ममर्श ममृशतुः ममृशुः ममर्शिथ । मर्ष्टा, म्रष्टा । म्रदयति, मर्दयति । मृशतु । अमृशत् । मृशेत् । मृश्यात् । अम्राक्षीत्, अमार्क्षीत् । अमृक्षत् । अम्रदयत्, अमर्दयत् ।

३७ षद्लृ (सद) = अवयव पृथक् करना, दुःखी होना ।

सीदति । ससाद सेदतुः सेदुः । सत्ता । सत्स्यति । सीदतु । असीदत् । सीदेत् । सद्यात् । असदत् । असत्स्यत् ।

३८ शद्लृ (शद) = शातन, विशीर्ण होना, बिखरना ।

शीयते शीयेते शीयन्ते शशाद शेदतुः शेदुः शत्ता शत्स्यति । शीयताम् । अशीयत शीयेत । शद्यात् । अशदत् । अशत्स्यत् ।

३९ कॄ = विक्षेप बखेरना ।

किरति चकार चकरतुः चकरुः करिता, करीता । करिष्यति करीष्यति किरतु । अकिरत् । किरेत् । कीर्यात् । अकारीत् । अकरिष्यत्, अकरीष्यत् ।

४० गृ = निगरण, निगलना ।

गिरति, गिलति । जगार, जगाल । गरिता, गरीता, गलिता गलीता । गरिष्यति, गरीष्यति, गलिष्यति, गलीष्यति, गिरतु, गिलतु । अगिरत्, अगिलत् । गिरेत्, गिलेत् । गीर्यात् , अगारीत् , अगालीत् । अगरिष्यत् अगरीष्यत् , अगलिष्यत् , अगलीष्यत् ।

४१ प्रच्छ = ज्ञीप्सा, जानने की इच्छा, पूछना ।

पृच्छति । पप्रच्छ पप्रच्छतुः पप्रच्छुः पप्रच्छिथ, पप्रष्ठ । प्रष्टा प्रक्ष्यति । पृच्छतु । अपृच्छत् । पृच्छेत् । पृच्छ्यात् । अप्राक्षीत् । अप्रक्ष्यत् ।

अथात्मनेपदिनः ।

४२ मृङ् = प्राण त्यागना, मरना ।

म्रियते म्रियेते म्रियन्ते । ममार मम्रतुः मम्रुः ममर्थ । मर्ता । मरिष्यति । म्रियताम् म्रियेताम् म्रियन्ताम् । अम्रियत अम्रियेताम् अम्रियन्त । म्रियेत म्रियेयाताम् म्रियेरन् । मृषीष्ट । मृषीयास्ताम् मृषीरन् । अमृत अमृषाताम् अमृषत । अमरिष्यत् ।

४३ पृङ् = व्यायाम व्यापार, कार्य करना ।

इसका प्रयोग प्रायः वी आङ् पूर्वक होता है । व्याप्रियते व्यापप्रे । व्यापर्ता । व्यापरिष्यते । व्याप्रियताम् , व्याप्रियत । व्याप्रियेत । व्यापृषीष्ट । व्यापृत । व्यापरिष्यत ।

४४ जुषी = प्रीति, सेवा करना ।

जो कुछ पूछता है वह पूछे। जो क्षमा तथा माया को जानता है ऐसे राजा को सम्पूर्ण श्री सेवती है। प्रतिष्ठा से ब्राह्मण सदा विष को नाईं डरे।

अथ रुधादिगणप्रकरणम्।

१ रुधिर् = आवरण, छादन, रोकना, ढाकना

लट्—रुणद्धि रुन्धः रुन्धन्ति रुणत्सि रुन्धः रुन्ध रुणध्मि रुन्ध्वः रुन्ध्मः। रुन्धे रुन्धाते रुन्धते रुन्त्से रुन्धाथे रुन्ध्वे रुन्धे रुन्ध्वहे रुन्ध्महे। लिट्—रुरोध रुरुधतुः रुरुधुः। रुरोधिथ रुरुधथुः रुरुध रुरोध रुरुधिव रुरुधिम। रुरुधे रुरुधाते रुरुधिरे। लुट्—रोद्धा रोद्धारौ रोद्धारः। रोद्धास्मि रोद्धास्मे। लृट्—रोत्स्यति रोत्स्यते। लोट्—रुणद्धु रुन्धात् रुन्धाम् रुन्धन्तु रुन्धि रुन्धात् रुन्धम् रुन्ध रुणधानि रुणधाव रुणधाम। रुन्धाम् रुन्धाताम् रुन्धताम् रुन्त्स्व रुन्धाथाम् रुन्ध्वम् रुणधै रुणधावहै रुणधामहै। लङ्—अरुणत्, द् अरुन्धाम् अरुन्धन् अरुणः अरुणत्, द् अरुन्धम् अरुन्ध अरुणधम् अरुन्ध्व अरुन्ध्म। अरुन्ध अरुन्धाताम् अरुन्धत अरुन्धाः अरुन्धाथाम् अरुन्ध्वम् अरुन्धि अरुन्ध्वहि अरुन्ध्महि। वि० लिङ्—रुन्ध्यात् रुन्ध्याताम् रुन्ध्युः रुन्धीत रुन्धीयाताम् रुन्धीरन्। आ० लिङ्—रुध्यात् रुध्यास्ताम् रुत्सीष्ट रुत्सीयास्ताम् रुत्सीरन्। लुङ्—अरौत्सीत् अरौत्सुः अरौत्सीः अरौद्धम् अरौद्ध अरौत्सम् अरौत्स्म। अरुधत् अरुधताम् अरुधन्। अरुद्ध अरुत्साताम् अरुत्सत अरुद्धाः अरुत्साथाम्। अरोत्स्यत्। अरोत्स्यत।

२ भिदिर् = विदारण, फाड़ना, चीरना।

भिनत्ति भिन्तः भिन्दन्ति। भिनत्सि भिन्थः भिन्थ भिनद्मि भिन्द्वः भिन्द्मः। भिन्ते भिन्दाते भिन्दते भिन्त्से भिन्दाथे भिन्ध्वे भिन्दे भिन्द्वहे भिन्द्महे। बिभेद बिभिदतुः बिभिदुः बिभेदिथ,

आनि युनजाव युनजाम। युङ्क्ताम् युञ्जाताम् युञ्जताम् युङ्-क्ष्व युञ्जाथाम् युङ्ग्ध्वम् युनजै युनजावहै युनजामहै। अयुनक्-ग् अयुङ्क्ताम् अयुञ्जन्। अयुङ्क्त अयुञ्जाताम् अयुञ्जत। युञ्ज्यात्। युञ्जीत। युज्यात्। युक्षीष्ट। अयुजत्, अयौक्षीत्। अयुक्त अयुक्षाताम् अयुक्षत। अयोक्ष्यत्। अयोक्ष्यत।

५ रिचिर् = विरेचन, दस्त आना, खाली करना

रिणक्ति रिङ्क्तः रिञ्चन्ति, रिङ्क्ते रिञ्चाते रिञ्चते। रिरेच रिरिचतुः रिरिचुः, रिरिचे रिरिचाते रिरिचिरे। रेक्ता। रेक्ष्यति रेक्ष्यते। रिणक्तु रिङ्क्ताम् रिञ्चन्तु रिङ्क्ताम् रिञ्चाताम् रिञ्च-ताम्। अरिणक् अरिङ्क्ताम् अरिञ्चन्, अरिङ्क्त अरिञ्चाताम् अरिञ्चत। रिञ्च्यात्, रिञ्चीत। रिच्यात्, रिक्षीष्ट। अरिचत्, अरैक्षीत् अरिक्त अरिक्षाताम् अरिक्षत। अरेक्ष्यत्, अरेक्ष्यत।

६ विचिर् = पृथग्भाव अलग होना।

विनक्ति। विङ्क्ते। विवेच। विविचे। वेक्ता। वेक्ष्यति।वेक्ष्यते। विनक्तु। विङ्क्ताम्। अविनक्। अविङ्क्त। विञ्च्यात् विञ्चीत विच्यात्। विक्षीष्ट। अविचत्, अवैक्षीत्। अविक्त। अवेक्ष्यत् अवेक्ष्यत।

७ क्षुदिर् = सम्प्रेषण, खूंदना पीसना, चूरा करना

क्षुणत्ति क्षुन्तः क्षुन्दन्ति। क्षुन्ते क्षुन्दाते क्षुन्दते चुक्षोद चुक्षुदतुः चुक्षुदुः। चुक्षुदे चुक्षुदाते चुक्षुदिरे। क्षोत्ता। क्षोत्स्यति क्षोत्स्यते। क्षुणत्तु क्षुन्ताम् क्षुन्दन्तु क्षुन्धि। क्षुन्ताम् क्षुन्दाताम् क्षुन्दताम्। अक्षुणत् अक्षुन्ताम् अक्षुन्दन् अक्षुन्त अक्षुन्दाताम् अक्षुन्दत। क्षुन्द्यात्। क्षुन्दीत। क्षुद्यात्। क्षुत्सीष्ट। अक्षुदत् अक्षौत्सीत् अक्षौत्ताम् अक्षौत्सुः। अक्षुत्त अक्षुत्साताम् अक्षु-त्सत। अक्षोत्स्यत्, अक्षोत्स्यत।

८ उच्छृदिर् = दीप्ति, देवन, प

छृणत्ति । छृन्ते । चच्छर्द । चच्छृदे । छर्दिता । छ
छर्त्स्यति । छर्दिष्यते । छर्त्स्यते । छृणत्तु छृन्ताम् ।
अछृन्त । छृन्द्यात् । छृन्दीत । छृद्यात् । छर्दिषीष्ट । अ
अच्छर्दीत् । अच्छृदत् अच्छर्दिष्ट । अच्छर्दिष्यत् अच्छ
अच्छर्दिष्यत, अच्छर्त्स्यत ।

९ उतृदिर् = हिंसा, अनादर ।

तृणत्ति, तृन्ते । ततर्द ततृदतुः ततृदुः । ततृदे तत
ततृदिरे । तर्दिता । तर्दिष्यति, तर्त्स्यति । तर्दिष्यते, तर्त्स्य
तृणत्तु । तृन्ताम् । अतृणत् अतृन्त । तृन्द्यात् । तृन्दीत । तृद्यात्
तृन्दीष्ट । अतृदत्, अतर्दीत् । अतर्दिष्ट । अतर्दिष्यत् अतर्त्स्यत
तर्दिष्यत, अतर्त्स्यत ।

कलत्रम् = स्त्री । अम्बरम् = वस्त्र, आकाश । अकिञ्चनः =
द, गरीब । कोरः = बढ़ई बढ़वा । कोविदः = पण्डित ।
रः = ऐश्वर्य । तिग्मः = तीक्ष्ण । तुरुष्कः = तुर्किस्तानी ।
नम् = शाल । उद्घाटनम् = खोलना । विश्रुतम् = प्रसिद्ध ।
= स्पष्ट, साफ़ । वैधुर्यम् = अभाव । कान्ता = तरुणी,
धनी । भव्यम् = कुशल । सरलम् = सीधा, सुगम । दारुण ।
= निशा, रात्रि । आम्नायः = वेद । खेलनम् = क्रीडन, खेलना ।
ढः = प्रगल्भ निपुण । कमनीयम् = सुन्दर । पुष्कलम् = बहुत ।
व: = मूर्ख । मोहः = अज्ञान । भ्रामकः = स्यार, घुमाने वाला ॥

भाषा बनाओ ।

मोऽहं वर्णान्वि विमर्शां इष्यते च बुद्धिम् सुते च सं कृतपद्-
दारशक्तिम् । भिनत्ति वस्त्राणि नतानरीयम् । छिनत्ति

आनि युनजाव युनजाम। युङ्क्ताम् युञ्जाताम् युञ्जताम् युङ्-क्ष्व युञ्जाथाम् युङ्ग्ध्वम् युनजै युनजावहै युनजामहै। अयुनक्-ग् अयुङ्क्ताम् अयुञ्जन्। अयुङ्क्त अयुञ्जाताम् अयुञ्जत। युञ्ज्यात्। युञ्जीत। युज्यात्। युक्षीष्ट। अयुजत्, अयौक्षीत्। अयुक्त अयुक्षाताम् अयुक्षत। अयोक्ष्यत्। अयोक्ष्यत।

५ रिचिर्=विरेचन, दस्त आना, खाली करना

रिणक्ति रिङ्क्तः रिञ्चन्ति, रिङ्क्ते रिञ्चाते रिञ्चते। रिरेच रिरिचतुः रिरिचुः, रिरिचे रिरिचाते रिरिचिरे। रेक्ता। रेक्ष्यति रेक्ष्यते। रिणक्तु रिङ्क्ताम् रिञ्चन्तु रिङ्क्ताम् रिञ्चाताम् रिञ्चताम्। अरिणक् अरिङ्क्ताम् अरिञ्चन्, अरिङ्क्त अरिञ्चाताम् अरिञ्चत। रिञ्च्यात्, रिञ्चीत। रिच्यात्, रिक्षीष्ट। अरिचत्, अरैक्षीत् अरिक्त अरिक्षाताम् अरिक्षत। अरेक्ष्यत्, अरेक्ष्यत।

६ विचिर् = पृथग्भाग अलग होना।

विनक्ति। विङ्क्ते। विवेच। विविचे। वेक्ता। वेक्ष्यति-वेक्ष्यते। विनक्तु। विङ्क्ताम्। अविनक्। अविङ्क्त। विञ्च्यात् विञ्चीत विच्यात्। विक्षीष्ट। अविचत्, अवैक्षीत्। अविक्त। अवेक्ष्यत् अवेक्ष्यत।

७ क्षुदिर् = सम्पेषण, खूंदना पीसना, चूरा करना

क्षुणत्ति क्षुन्तः क्षुन्दन्ति। क्षुन्ते क्षुन्दाते क्षुन्दते। चुक्षोद चुक्षुदतुः चुक्षुदुः। चुक्षुदे चुक्षुदाते चुक्षुदिरे। क्षोत्ता। क्षोत्स्यति क्षोत्स्यते। क्षुणत्तु क्षुन्ताम् क्षुन्दन्तु क्षुन्धि। क्षुन्ताम् क्षुन्दाताम् क्षुन्दताम्। अक्षुणत् अक्षुन्ताम् अक्षुन्दन् अक्षुन्त अक्षुन्दाताम् अक्षुन्दत। क्षुन्द्यात्। क्षुन्दीत। क्षुद्यात्। क्षुत्सीष्ट। अक्षुदत् अक्षौत्सीत् अक्षौत्ताम् अक्षौत्सुः। अक्षुत्त अक्षुत्साताम् अक्षु-त्सत। अक्षोत्स्यत्, अक्षोत्स्यत।

८ उच्छृदिर् = दीप्ति, देवन, प्रकाश ।

छृणत्ति । छृन्ते । चच्छर्द । चछृदे । छर्दिता । छर्दिष्यति, । छर्त्स्यति । छर्दिष्यते । छर्त्स्यते । छृणत्तु छृन्ताम् । अछृणत् अछृन्त । छृन्द्यात् । छृन्दीत । छृद्यात् । छर्दिषीष्ट । अच्छृदत्, अच्छर्दीत । अच्छृत्त अच्छर्दिष्ट । अच्छर्दिष्यत् अच्छर्त्स्यत् । अच्छर्दिष्यत, अच्छर्त्स्यत ।

६ उतृदिर = हिंसा, अनादर ।

तृणत्ति, तृन्ते । ततर्द ततृदतुः ततृदुः । ततृदे ततृदाते ततृदिरे । तर्दिता । तर्दिष्यति, तर्त्स्यति । तर्दिष्यते, तर्त्स्यते तृणत्तु । तृन्ताम् । अतृणत् । अतृन्त । तृन्द्यात् । तृन्दीत । तृद्यात् । तर्दिषीष्ट । अतृदत्, अतर्दीत् । अतर्दिष्ट । अतर्दिष्यत् अतर्त्स्यत् । अतर्दिष्यत, अतर्त्स्यत ।

कलत्रम् = स्त्री । अम्बरम् = वस्त्र, आकाश । अकिञ्चनः = दरिद्र, गरीब । कोकः = चकई चकवा । कोविदः = पण्डित । विभवः = ऐश्वर्य्य । तिग्मः = तीक्ष्ण । तुरुष्कः = तुरुकिस्तानी । विश्राणनम् = दान । उद्घाटनम् = खोलना । विश्रुतम् = प्रसिद्ध । स्फुटम् = स्पष्ट, साफ़ । वैधुर्यम् = अभाव । काञ्ची = तगड़ी, करधनी । भव्यम् = कुशल । सरलम् = सीधा, सुगम । क्षणदा = निशा, रात्रि । आम्नायः = वेद । खेलनम् = क्रीडन, खेलना । प्रौढः = प्रगल्भ निपुण । कमनीयम् = सुन्दर । पुष्कलम् = बहुत । मुग्धः = मूर्ख । मोहः = अज्ञान । भ्रामकः = ज्वार, घुमाने वाला ॥

भाषा बनाओ ।

मोहं रुणद्धि विमलां कुरुते च बुद्धिम सूते च सं कृतपदव्यवहारशक्तिम् । भिनत्ति धर्माणि तमस्तरां यम । छिनत्ति

१४ अञ्जु = प्रकट होना, चिकना करना। इच्छा, गति।

अनक्ति अङ्क्तः अञ्जन्ति। आनञ्ज आनञ्जतुः आनञ्जुः आनञ्जिथ, आनङ्क्थ। अञ्जिता, अङ्क्ता। अञ्जिष्यति। अङ्क्ष्यति अनक्तु अङ्क्तात् अङ्क्ताम् अञ्जन्तु अङ्ग्धि अनजानि। आनक् आङ्क्ताम् आञ्जन् आनक् आङ्क्तम् आङ्क्त आनजम् आञ्ज्व आञ्ज्म। अञ्ज्यात्। अज्यात्। आञ्जीत् आञ्जिष्टाम् आञ्जिषुः। आङ्क्षीत्। आञ्जिष्यत्, आङ्क्ष्यत्।

१५ तञ्चु = संकोचन, सकोड़ना।

तनक्ति तङ्क्तः तञ्चन्ति। ततञ्च ततञ्चतुः ततञ्चुः। तञ्चिता, तङ्क्ता। तञ्चिष्यति, तङ्क्ष्यति। तनक्तु। अतनक् अतङ्क्ताम् अतञ्चन्। तञ्च्यात्। तच्यात्। अतञ्चीत्, अताङ्क्षीत्। अतञ्चिष्यत्, अतङ्क्ष्यत्।

१६ ओ-विजी = भय, कांपना।

विनक्ति विङ्क्तः विञ्जन्ति। विवेज विविजतुः विविजुः। विजिता। विजिष्यति। विनक्तु। अविनक्। विञ्ज्यात्। विज्यात् अविजीत् अविजिष्टाम् अविजिषुः। अविजिष्यत।

१७ शिष्लृ = विशेषण।

शिनष्टि शिंष्टः शिंषन्ति। शिशेष शिशिषतुः शिशिषुः। शेष्टा। शेक्ष्यति। शिनष्टु। अशिनट् अशिंष्टाम् अशिंषन्। शिंष्यात्। शिष्यात्। अशिषत्। अशेक्ष्यत्।

१८ पिष्लृ = सञ्चूर्ण, पीसना।

पिनष्टि। पिपेष। पेष्टा। पेक्ष्यति। पिनष्टु। अपिनट्। पिंष्यात् पिष्यात। अपिषत्। अपेक्ष्यत्।

१९ भञ्जो = आमर्दन, भंग करना, तोड़ना, फोड़ना।

भनक्ति भङ्क्तः भञ्जन्ति भनक्षि। बभञ्ज बभञ्जतुः बभञ्जुः बभञ्जिथ, बभङ्क्थ। भङ्क्ता। भङ्क्ष्यति। भनक्तु। अभनक्। भज्यात्। भज्यात्। अभाङ्क्षीत् अभाङ्क्ताम् अभाङ्क्षुः। अभङ्क्ष्यत्।

२० भुज = पालन, भोजन करना।

यह धातु पालन अर्थ में परस्मैपदी है और भोजन अर्थ में आत्मनेपदी रहता है। भुनक्ति भुङ्क्तः भुञ्जन्ति। बुभोज बुभुजतुः बुभुजुः। भोक्ता। भोक्ष्यति। भुनक्तु। अभुनक्। भुञ्ज्यात्। भुज्यात्। अभौक्षीत् अभौक्ताम् अभौक्षुः। अभोक्ष्यत्। भुङ्क्ते। भुञ्जाते भुञ्जते। बुभुजे बुभुजाते बुभुजिरे। भोक्ता। भोक्ष्यते। भुङ्क्ताम् अभुङ्क्त। भुञ्जीत। भुक्षीष्ट। अभुक्त अभुक्षाताम् अभुक्षत। अभोक्ष्यत।

अथ द्वावात्मनेपदिनौ।

२१ ञि-इन्धी = दीप्ति, चमक, जलना।

इन्धे। इन्धाञ्चक्रे, इन्धाम्बभूव। इन्धामास। इन्धिता। इन्धिष्यते। इन्धाम्। ऐन्ध। इन्धीत। इन्धिषीष्ट। ऐन्धिष्ट। ऐन्धिष्यत।

२२ विद = विचारना।

विन्दे विन्दाते विन्दते। विविदे विविदाते विविदिरे। वेत्ता। वेत्स्यते। विन्ताम्। अविन्त विन्दीत। वित्सीष्ट। अवित्त अवित्साताम् अवित्सत। अवेत्स्यत।

कैङ्कर्यम् = दासत्व, सेवकाई। भाषणम् – कथन। विकत्थनम् = तारीफ। विरञ्चः–विधाता, ब्रह्मा। कटकः = सेना। प्रणालः = पनाला। स्फटिकः–स्फटिक। ताम्रम् = तांबा। वर्ध

१९ भञ्जो = आमर्दन, भंग करना, तोड़ना, फोड़ना ।

भनक्ति भङ्क्तः भञ्जन्ति भनक्षि । बभञ्ज बभञ्जतुः बभञ्जुः । बभञ्जिथ, बभङ्क्थ । भङ्क्ता । भङ्क्ष्यति । भनक्तु । अभनक् । भञ्ज्यात् । भज्यात् । अभाङ्क्षीत् अभाङ्क्ताम् अभाङ्क्षुः । अभङ्क्ष्यत् ।

२० भुज = पालन, भोजन करना ।

यह धातु पालन अर्थ में परस्मैपदी है और भोजन अर्थ में आत्मनेपदी रहता है। भुनक्ति: भुङ्क्तः भुञ्जन्ति । बुभोज बुभुजतु, बुभुजुः । भोक्ता। भोक्ष्यति। भुनक्तु । अभुनक् । भुञ्ज्यात् । भुज्यात् । अभौक्षीत् अभौक्ताम् अभौक्षु । अभोक्ष्यत् । भुङ्क्ते । भुञ्जाते भुञ्जते । बुभुजे बुभुजाते बुभुजिरे । भोक्ता । भोक्ष्यते भुङ्क्ताम् अभुङ्क्त । भुञ्जीत । भुक्षीष्ट । अभुक्त अभुक्षाताम् अभुक्षत । अभोक्ष्यत ।

अथ द्वावात्मनेपदिनौ ।

२१ ञि-इन्धी = दीप्ति, चमक, जलना ।

इन्धे । इन्धाञ्चक्रे, इन्धाम्बभूव । इन्धामास । इन्धिता । इन्धिष्यते । इन्धाम् । ऐन्ध । इन्धीत. इन्धिषीष्ट ऐन्धिष्ट । ऐन्धिष्यत ।

२२ विद = विचारना ।

विन्ते विन्दाते विन्दते । विविदे विविदाते विविदिरे । वेत्ता । वेत्स्यते । विन्ताम् । अविन्त विन्दीत । वित्सीष्ट । अवित्त अवित्साताम् अवित्सत । अवेत्स्यत ।

कैङ्कर्यम् = दासत्व, सेवकाई । भाषणम् = कथन । विकत्थनम् = तारीफ । विकटः-विशाल, बड़ा । कटकः-सेना । प्रणालः=पनाला । क्षत्रियः-खत्रिय । ताम्रम्=तांबा । कर्ष

तनुथ तन्वाथाम् तनुध्वम् तनवै तनवावहै तनवामहै । अतनोत् अतनुताम् अतन्वन् अतनोः अतनुतम् अतनुत अतनवम् अतनुव, अतन्व अतनुम, अतन्म । अतनुत अतन्वाताम् अतन्वत अतनुथाः अतन्वाथाम् अतनुध्वम् अतन्वि अतनुवहि, अतन्वहि अतनुमहि अतन्महि । तनुयात् तनुयाताम् तनुयुः । तन्वीत तन्वीयाताम्, तन्वीरन् । तन्यात् तन्यास्ताम् तन्यासुः । तनिषीष्ट तनिषीयास्ताम् तनिषीरन् । अतनीत्, अतानीत् अतनिष्टम् अतानिष्टाम् अतत, अतनिष्ट अतनिषाताम् अतनिषत, अतथाः अतनिष्ठाः । अतनिष्यत्, अतनिष्यत ।

२ षणु = दान, देना ।

सनोति । सनुते । ससान सेनतुः सेनुः । सेने सेनाते सेनिरे । सनिता । सनिष्यति, सनिष्यते । सनोतु । सनुताम् । असनोत् असनुताम् असन्वन् । असनुत असन्वाताम् असन्वत सनुयात् । सन्वीत । सन्यात्, सायात् । सनिषीष्ट । असनीत्, असानीत् । असात, असनिष्ट । असनिष्यत् । असनिष्यत ।

३ क्षणु = हिंसा, दुःख देना ।

क्षणोति । क्षणुते । चक्षाण चक्षणतुः चक्षणुः । चक्षणे चक्षणाते चक्षणिरे । क्षणिता । क्षणिष्यति । क्षणिष्यते । क्षणोतु । क्षणुताम् । अक्षणोत् । अक्षणुत । क्षणुयात् । क्षण्वीत । क्षण्यात् क्षणिषीष्ट । अक्षणीत् अक्षणिष्टाम् अक्षणिषुः । अक्षत, अक्षणिष्ट अक्षथाः अक्षणिष्ठाः । अक्षणिष्यत्, अक्षणिष्यत ।

४ क्षिणु = हिंसा, मारना, दुःख देना ।

क्षेणोति क्षिणोति, क्षेणुते, क्षिणुते । चिक्षेण चिक्षिणतुः चिक्षिणुः । चिक्षिणे चिक्षिणाते चिक्षिणिरे । क्षेणिता । क्षेणिष्यति । क्षेणिष्यते । क्षिणोतु, क्षेणोतु । क्षिणुताम्, क्षेणुताम् । अक्षिणोत् । अक्षेणोत् । अक्षिणुत, अक्षेणुत । क्षिणुयात् । क्षेणु-

यात्। क्षिप्सीत, क्षेप्सीत। क्षिप्यात्। क्षिप्सीष्ट। अक्षेप्सीत, अक्षेप्सिष्टाम, अक्षेप्सिषुः। अक्षिन, अक्षेप्सिष्ट। अक्षेप्स्यत्। अक्षेप्स्यत।

५ तृणु = अदन, खाना, चरना।

तृणोति, तर्णोति। तृणुते, तर्णुते। ततर्ण ततृणतुः। ततृणे ततृणाते। तर्णिता। तर्णिष्यति। तर्णिष्यते। तृणोतु, तर्णोतु। तृणुताम्, तर्णुताम्। अतृणोत्, अतर्णोत्। अतृणुत, अतर्णुत। तृणुयात्, तर्णुयात्। तृणुवीत, तर्णुवीत। तृण्यात्। तृर्णिषीष्ट। अतर्णीत्। अतृत, अतर्णिष्ट। अतृथाः, अतर्णिष्ठाः। अतर्णिष्यत्। अतर्णिष्यत।

६ डुकृञ्-कृ = करण, करना, बनाना।

करोति। कुरुते कुर्वाते कुर्वते कुरुषे कुर्वाथे कुरुध्वे कुर्वे कुर्वहे कुर्महे। चकार चक्रतुः चक्रुः चकर्थ। चक्रे चक्राते चक्रिरे। कर्ता। करिष्यति। करिष्यते। करोतु। कुरुताम् कुर्वाताम् कुर्वताम् कुरुष्व कुर्वाथाम् कुरुध्वम् करवै करवावहै करवामहै। अकरोत् अकुरुताम् अकुर्वन् अकरोः अकुरुताम् अकुरुत अकरवम् अकुर्व अकुर्म। अकुरुत अकुर्वाताम् अकुर्वत अकुरुथाः अकुर्वाथाम् अकुरुध्वम् अकुर्वि अकुर्वहि अकुर्महि। कुर्यात् कुर्याताम् कुर्युः। कुर्वीत कुर्वीयाताम् कुर्वीरन्। क्रियात् क्रियास्ताम् क्रियासुः। कृषीष्ट कृषीयास्ताम् कृषीरन्। अकार्षीत् अकार्ष्टाम् अकार्षुः। अकृत अकृषाताम् अकृषत। अकरिष्यत्। अकरिष्यत।

अथात्मनेपदप्रकरणम्।

७ वनु = याचन, माँगना।

वनुते। ववने। वनिता। वनिष्यते। वनुताम्। अवनुत वन्वीत। वनिषीष्ट। अवनिष्ट, अवत अवनिषाताम् अवनिषत अवनिष्ठाः, अवथाः। अवनिष्यत।

तात् क्रीणीतम् क्रीणीत क्रीणानि क्रीणाव क्रीणाम । क्रीणीताम् क्रीणाताम् क्रीणताम् क्रीणीष्व क्रीणाथाम् क्रीणीध्वम् क्रीणै क्रीणावहै क्रीणामहै । अक्रीणात् अक्रीणीताम् अक्रीणन् अक्रीणाः अक्रीणीतम् अक्रीणीत अक्रीणाम् अक्रीणीव अक्रीणीम । अक्रीणीत अक्रीणाताम् अक्रीणत अक्रीणीथाः अक्रीणाथाम् अक्रीणीध्वम् अक्रीणि अक्रीणीवहि अक्रीणीमहि । क्रीणीयात् क्रीणीयाताम् क्रीणीयुः । क्रीणीत क्रीणीयाताम् क्रीणीरन् । क्रीयात् क्रीयास्ताम् क्रीयासुः । क्रेषीष्ट क्रेषीयास्ताम् क्रेषीरन् । अक्रैषीत् अक्रैष्टाम् अक्रैषुः । अक्रेष्ट अक्रेषाताम् । अक्रेष्यत्, अक्रेष्यत ।

२ प्रीञ् = तर्पण तृप्ति, कान्ति ।

प्रीणाति । प्रीणीते । पिप्राय पिप्रियतुः पिप्रियुः । पिप्रिये पिप्रियाते पिप्रियिरे । प्रेता । प्रेष्यति, प्रेष्यते । प्रीणातु । प्रीणीताम् । अप्रीणात् । अप्रीणीत । प्रीणीयात् प्रीणीत । प्रीयात्, प्रेषीष्ट । अप्रैषीत् । अप्रेष्ट । अप्रेष्यत्, अप्रेष्यत ।

३ श्रीञ् = हिंसा, दुःख देना ।

श्रीणाति । श्रीणीते । शिश्राय । शिश्रिये । श्रेता । श्रेष्यति । श्रेष्यते । श्रीणातु । श्रीणीताम् । अश्रीणात् । अश्रीणीत । श्रीणीयात्, श्रीणीत । श्रीयात् । श्रेषीष्ट । अश्रैषीत् । अश्रेष्ट । अश्रेष्यत् अश्रेष्यत ।

४ मीञ् = हिंसा, दुःख देना ।

मीनाति । मीनीते । ममौ मिम्यतुः मिम्युः । ममिथ, ममाथ मिम्यथुः मिम्य ममौ मिम्यिव मिम्यिम । मिम्ये मिम्याते मिम्यिरे । माता । मास्यति । मास्यते । मीनातु । मीनीताम् । अमीनात् अमीनीत । मीनीयात् । मीनीत । मीयात् । मासीष्ट । अमासीत् । अमास्त । अमास्यत्, अमास्यत ।

५ षिञ् = बन्धन, बांधना ।

सिनाति । सिनीते । सिषाय सिष्यतुः सिष्युः । सिष्ये

ष्यति । फनविष्यते । फनूनातु । पनूनीताम् । अफनूनात् अपनू-
नीत । फनूनीयात् । फनूनीत फनूयात् । फनविषीष्ट । अफना-
वीत् अफनाविष्टाम् अफनाविषुः । अफनविष्ट । अफनविष्यत्,
अफनविष्यत ।

१३ दॄञ् = हिंसा ।

दृणाति दृणीते । दुद्राव । दुद्रुवे । द्रविता । द्रविष्यति ।
द्रविष्यते । दृणातु । दृणीताम् । अदृणात् । अदृणीत । दृणीयात् ।
दृणीत, द्रूयात् । द्रविषीष्ट । अद्रावीत्, अद्रवीत् अद्रविष्ट ।
अद्रविष्यत् । अद्रविष्यत ।

१४ पूञ् = पवन, शोधन, पवित्रता ।

पुनाति पुनीते । पुपाव पुपुवतुः पुपुवुः, पुपुवे पुपुवाते
पुपुविरे । पविता । पविष्यति । पविष्यते । पुनातु । पुनीताम्
अपुनात् । अपुनीत । पुनीयात् । पुनीत । पूयात् । पविषीष्ट ।
अपावीत् अपाविष्टाम् अपाविषुः । अपविष्ट अपविषाताम्
अपविषत । अपविष्यत् । अपविष्यत । एवं लूआदिरूपाणि ।

१५ स्तॄञ् = आच्छादन, ढांकना ।

स्तृणोति । स्तृणीते । तस्तार तस्तरतुः तस्तरुः । तस्तरे
तस्तराते तस्तरिरे । स्तरिता, स्तरीता । स्तरिष्यति, स्तरीष्यति ।
स्तरिष्यते स्तरीष्यते । स्तृणातु । स्तृणीताम् । अस्तृणात् अस्तृ-
णीत । स्तृणीयात् । स्तृणीत । स्तीर्यात् । स्तीर्षीष्ट, स्तरिषीष्ट ।
लुङ्-अस्तारीत् अस्तारिष्टाम् अस्तारिषुः । आ० अस्तरिष्ट अस्त-
रिषाताम् अस्तरिषत, अस्तरीष्ट अस्तीर्ष्ट । लृङ्-अस्तरिष्यत्
अस्तरीष्यत् । आ० अस्तरिष्यत, अस्तरीष्यत ।

१६ कॄञ् = हिंसा, दुःख देना ।

कृणाति, कृणीते । चकार चकरतुः चकरुः । चकरे चकराते
चकरिरे करिता, करीता । करिष्यति, करीष्यति । करिष्यते

भाषा बनाओ । (अभ्यास ४१)

क्रीणामि दुग्धं पणकद्वयस्य। प्रीणाति बन्धव जनानतिथीन् पृणोति । श्रीणाति शाकं झटिति कथं न। मीनन्ति मीनान् शिशवस्त्वदीयाः । स्कुवन्ति कुम्भी मदीयशिष्याः। सिनन्ति षण्ढा न कदापि शूरान्। पथिकान् स्तभ्नाति तस्करः। रज्ज्वा योत्स्यन्ति तस्करान्। क्नूनाति नित्यं वस्त्रं त्वदीयम्। हणाति सिंहो वृषभान् मदीयान् हणाति सिंहः सकलान् क्रमेलान्। पुनन्तु मां वेदजनाः। स्तृणातु वस्त्रैः मदङ्गं शरीरम्। हणन्ति कोलान् विपिने वनेचराः। वचो मे न वरिष्यसि। धूनोति चम्पककाननानि धुनोत्यशोकम्। विधर्मिणो वेदमतं गृह्णन्ति। क्ष्णाति शाटं भवतां न भृत्यः। अशिष्यन्ति न मे शिष्याः। मोषिष्यन्ति न तस्कराः। आनीयात् प्रेषणे भृत्यान्। वृणीते स्वामिनं भार्या।

(अभ्यास ४२)

संस्कृत बनाओ ।

दो पैसे का दूध लेता हूँ। भाई और अतिथियों को तृप्त करता है। यह शाक शीघ्र क्यों नहीं पकता। तुम्हारे लड़के मछलियों को मारते हैं। आपके शिष्य टट्टों को कूदते हैं। नपुंसक कभी शूरों को नहीं बांधते हैं। चोर रास्तेगीरों को रोकता है। रस्सी से चोरों को बांधेंगे। तुम्हारी गाड़ी नित्य कूंजती है। मेरे बैलों को सिंह मारता है। सिंह सब ऊँटों को मारता है। विद्वान् लोग मुझको पवित्र करें। मम शरीर को वस्त्रों से ढांक। भील वन में सुअरों को मारते हैं। आप मेरे वचन को स्वीकार नहीं करेंगे। चमेली के वन तथा अशोक वृक्ष को कँपाता है। अन्य मत वाले भी इस वेदमत को स्वीकार करते हैं। आपका नौकर कपड़े को निचोड़ता नहीं। मेरे छात्र नहीं खायेंगे। चोर नहीं चुरायेंगे। नौकरों को भेजने पर लावें। स्त्री पति को स्वीकार करता है।

अथ चुरादिगणप्रकरणम् ।

१ चुर = स्तेय, चुराना ।

चोरयति चोरयतः चोरयन्ति । चोरयते चोरयेते चोरयन्ते चोरयाञ्चकार चोरयाञ्चक्रतुः चोरयाञ्चक्रुः चोरयाञ्चकर्थ । चोरयामास । चोरयाम्बभूव । चोरयाञ्चक्रे । चोरयिता । चोरयिष्यति, चोरयिष्यते । चोरयतु । चोरयताम् । अचोरयत् । अचोरयत । चोरयेत् । चोरयेत । चोर्यात् । चोरयिषीष्ट । अचूचुरत् । अचूचुरत । अचोरयिष्यत् । अचोरयिष्यत ।

२ कथ = वाक्यप्रबन्ध, बोलना कहना ।

कथयति । कथयते । कथयाञ्चकार । कथयाञ्चकर्थ । कथयामास । कथयाम्बभूव । कथयाञ्चक्रे । कथयिता । कथयिष्यति, कथयिष्यते । कथयतु । कथयताम् । अकथयत् । अकथयत । कथयेत् । कथयेत । कथ्यात् । कथयिषीष्ट । अचकथत् । अचकथत । अकथयिष्यत् । अकथयिष्यत ।

३ गण = सङ्ख्यान, गिनना ।

गणयति । गणयते । गणयाञ्चकार । गणयाञ्चकर्थ । गणयामास । गणयाम्बभूव । गणयाञ्चक्रे । गणयिता । गणयिष्यति । गणयिष्यते । गणयतु । गणयताम् । अगणयत् । अगणयत । गणयेत् । गणयेत । गण्यात् । गणयिषीष्ट । अजीगणत्, अजगणत । अजीगणत । अजगणत । अगणयिष्यत्, अगणयिष्यत ।

क्षौरम् = हजामत । शौचम् = शुद्धि, मल त्याग । शोथः = सूजन । शोणितम् = खून । श्मश्रुलः = दाढ़ियल । प्रतिश्यायः = जुकाम । विसूचिका = हैज़ा । [illegible] = खांसना । निर्वाहः = गुज़ारा । निर्वापणम् = बीज बोना । मेदुरः = मोटा । आमयः = रोग । उन्मूलनम् = उखाड़ना । कर्णजलौका = कानखजूरा । अभिरामम् = सुन्दर अभिनन्दनम् = रोचन ।

कर्पटः = चीथड़ा । कपटः = पैंठ । कूर्चम् = दाढ़ी । क्वाथः = काढ़ा । परिणामः = नतीजा । संकटम् = दुःख । शृङ्गकम् = पिचकारी । विकटम् = टेढ़ा । मल्लता = पहलवानी ।

(अभ्यास ४३)

भाषा बनाओ

अचूचुरच्चन्द्रमसोऽभिरामताम् । कथं न कथयानि कवीनाम् । मनस्वी कार्यार्थी गणयति दुःखं न च सुखम् । चौरं कस्य भविष्यति । प्रतिद्याथं न कामये । अवसरं न जहातु कदाचन । चौरस्य कूर्चे हि तृणं प्रसिद्धम् । क्वाथं पिबन्ति रोगिणः । सङ्कटं ते गमिष्यति । मुषाणु रत्नानि हरामराङ्गनाः ।

(अभ्यास ४४)

संस्कृत बनाओ ।

चन्द्रमा की शोभा को चुरा लिया । कवियों की कथा क्यों न कहूँ ? कार्य को पूर्ण करने वाला विचार शील पुरुष दुःख और सुख को नहीं गिनता । इजामत किसकी होगी । मैं सुकाम को नहीं चाहता । मौके को कभी न छोड़ो । चोर की दाढ़ी में तिनका यह बात प्रसिद्ध है । रोगी काढ़ा पीते हैं । तेरा दुःख दूर हो जायेगा । रत्नों को चुराया और देवों की स्त्रियों को हरा ।

द्वीपम् = टापू । सरोवरः = झील, ताल । जनसंख्या = आबादी । शिलाकणम् = कंकड़ी । शिलाखण्डम् = पटिया । उद्गमः = निकासी । धरातलम् = भूमि । तापमापकयन्त्रम् = थरमामीटर । शतकम् = शताब्दी, सदी । अराजकता = अंधाधुन्धी । वितरणम् = बांटना । न्यूनता = कमी । करः = हाथ, हाथी की सूँड़ व किरण । करीषम् = महमूली । निर्वाचनम् = चुनाव । निर्वाचकः = चुनने वाला । आदर्शः = नमूना, दर्पण । आधिक्यम् = ज्यादती । वैमनस्यम् = वैरभाव । दण्ड्यः = सज़ा के लायक़ । श्रोष्ठयम् = अच्छापन । गरिष्ठ = बहुत ही बड़ा । गोष्ठम् = गोहरा ।

मधुपः पेन्सिलं चोरम् । सोमकान्तस्य गृहात् गोधेश्चरन्ति वायसाः । सोमस्यं नवेदं वर्षे । निद्रा सुखं न कारिता शुकाः पतन्ति हि कदाचित् । सुखं मन्ये त्वया सर्वं महेन्द्रः क्रियाशीलानि । सोमस्तमिद् कार्यं नहि कार्यं कदाचन ।

(अभ्यास ४८)

मानग्रन्थिः = अहंकार । मण्डपः = बरामदा, कोठी । मरकटी = मिर्चा । मल्लभूः = अखाड़ा । भ्रमरकः = जुल्फें, पट्टे । मक्षिकः = मक्खी । भङ्गा = भांग । भारकः = कुली । भृतकः = मजदूर । मणिबन्ध = हाथ का पहुँचा, कलाई । घुंघरः = घुंघर । प्रस्रावः = पेशाब, मूत्र । वणिग्भावः = वाणिज्य । मलाटः = मूँग । मण्डः = मांड । सन्निभम् = समान । शिक्यम् = छींका । लाक्षा = लाख । शस्य = धान, घास । राजस्वम् = कर, मालगुजारी । उपद्रवः = उत्पात, झगड़ा । रोरुदा = बहुत रोना । लाघवम् = लघुता, हलकापन । लाङ्गलम् = हल । नूपुरम् = बिछुआ ।

भाषा विरचयन ।

मम मानग्रन्थिर्नहि वर्तते सखे ! न मण्डपे सन्ति सभासदः सभे । मरकटो धवल. प्रतिभाति मे । वरं न मल्लभूरियम् । भ्रमरका पवनाय च कोहद्याः । मक्षिका निपतन्ति मुहुर्मुहुः । भङ्गा पिबन्ति मनुजा मनुजास्त्वदीयाः । भारं वहन्ति भारकाः । भृतकाः कार्यं न कुर्वन्ति । जलं स्रवति छुन्दरात् । प्रस्रावं कर्तुमिच्छामि आज्ञापयतु मे गुरो ! वाणिग्भावं करोम्यहम् । मह्यं न रोचते सूपो मलाटस्य कदाचन । सायणस्य संनिभं भाष्यं महीधरस्य न विद्यते । शिक्ये मिष्टं न विद्यते । लाक्षाया रञ्जनं वरम् । राजस्वं न ददाति सः । उपद्रवं न कुर्वन्तु भारतीयाः समाः प्रजाः । लघुता हेया सदा सर्वैर्महत्ता धार्यतां सदा ।

आर्यमिश्रः = अतिश्रेष्ठ । मुञ्ज = मूँज । मूर्च्छालः = बेहोश । मेन्धी = मेन्दी । वारः = क्रम, बारी । वार्त्तम् = आरोग्य, कुशल ।

धूर्त्तः = लुच्चा । विष्टिः = वेतन, तनख्वाह । विसृष्टिः = छुट्टी । वैकल्यम् = घबराहट । शोणम् = सिन्दूर । चिक्कणम् = चिकना । भावितम् = छौंका हुआ । पृथुकः = मुरमुरा । जेमनम् = भोजन । सौरभेयः = बैल । सौरभेयी = गाय । कीलकः = खूँटी, कील । नैमेयः = लेनदेन । सत्यङ्कारः = बयाना । मिथ्याटोपः = झूठा गर्व । रिक्थम् = धन । प्रावारः = दुपट्टा । न्यासः = धरोहर । विलक्षः = विस्मित, हैरान । निदाघः = ग्रीष्म ऋतु । निर्वेदः = उदासीनता, वैराग्य । कण्ठीरवः = सिंह । अल्पवयस्कः = कम उम्र वाला । शाणम् = कसौटी सान । तीव्रविरोधः = सख्त मुखालफत । शिक्षकः = पढ़ाने वाला । भक्षकः = खाने वाला ।

श्रीमन्तो भवन्तो भगवन्त आर्यमिश्राः प्रणयन्ते मया । मुग्धस्य किं लक्षणम् । अद्य मम वास्तत्र गमनस्य किम् ? । स मूर्च्छितोऽस्ति । न धूर्तं द्रष्टुमिच्छामि । वैकल्यं विद्यते कथम् । उदरे शोथो न विद्यते । कथं ते चिक्कणं वस्त्रम् । भावितं शाकं नास्ति । पृथुकांश्चर्वन्ति बालकाः । जेमनाय व्रजामि भो ! सौरभेयीं पश्यति सौरभेयः । नैमेया भवति मे गृहे । सत्यङ्कारं ददाम्यहम् न धूर्तं कीलके पटम् । गृहं गतो यशोधरः । कण्ठीरवस्य शब्दो वर्तते एषः । दैवीविचित्रा गतिः ।

प्रगुणः = सीधा । प्रत्यग्रः = नवीन । अनुपदम् = पीछे । द्रुतम् = शीघ्र । भुग्नम् = टूटा हुआ । प्रार्थितम् = मांगा हुआ । छन्नम् = ढका हुआ । निष्प्रभम् = निस्तेज । छिन्नम् = कटा हुआ । स्खलम् = चूगया । विन्नम् = प्राप्त, मिला । नुन्नम् = भेजा । क्लिन्नम् = आर्द्र गीला । प्रतिपन्नम् = जाना । माणवकः = बालक । वैशद्यम् = विमल, साफ । आविलम् = गदला । कालुष्यम् = कुविचार, पाप । साहसम् = हौसला । वप्रम् = घेरा, सफील खेत । ऐकागारिकः = चोर । उदर्कः = परिणाम । शाकुनिकः = चिड़ीमार । उदन्तः = वृत्तान्त, हाल । वाटः

वीन याकरण